वर्ष 4, संयुक्तांक
जनवरी–जून 2024

RNI पंजीकरण संख्या - UPHIN/2021/89341
सहयोग राशि : ₹ 60.00

आंबेडकरवादी साहित्य

आंबेडकर-दर्शन पर आधारित त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका

महाकवि एल. एन. सुधाकर

- व्यक्तित्व एवं कृतित्व

'आंबेडकरवादी साहित्य' बाबा साहेब डॉ. भीमराव आंबेडकर की मानवतावादी विचारधारा के प्रचार-प्रसार हेतु समर्पित है। डॉ. आंबेडकर की विचारधारा का स्वरुप अत्यंत व्यापक है, जिसमें तथागत बुद्ध, संत कबीर, संत रविदास, संत गाडगे, नारायण गुरु, पेरियार रामास्वामी, ज्योतिराव फुले आदि महापुरुषों के दर्शन का समावेश है। अतः उक्त बात को ध्यान में रखते हुए आंबेडकरवादी साहित्य का घोषणा-पत्र तैयार किया गया है, जो अग्रलिखित है।

आंबेडकरवादी साहित्य का घोषणा-पत्र

'आंबेडकरवादी साहित्य' से संबंधित स्मरणीय बिंदु निम्नलिखित हैं -

1. आंबेडकरवादी साहित्य ' आंबेडकरवाद' का पोषक है। 'आंबेडकरवाद का अर्थ है- आंबेडकर का कथन यानी आंबेडकर-दर्शन। आंबेडकर-दर्शन डॉ0 आंबेडकर की विचारधारा का समग्र रुप है, जिसमें बुद्ध-वाणी, रविदास-वाणी आदि का भी समावेश है।
2. अनीश्वरवाद, अनात्मवाद, दुखवाद, प्रतीत्य-समुत्पाद, समता, स्वतंत्रता, बंधुत्व, न्याय, प्रज्ञा, करुणा, शील, मैत्री आदि सभी सिद्धांत एवं मानवीय मूल्य आंबेडकर-दर्शन के अंग हैं। अतः इन सभी का आंबेडकरवादी साहित्य से घनिष्ठ संबंध है।
3. आंबेडकरवादी साहित्य सामाजिक, शैक्षिक, राष्ट्रीय एवं वैज्ञानिक चेतना का प्रेरक है।
4. आंबेडकरवादी साहित्य समाज और संस्कृति से संबंधित तथ्यपूर्ण एवं प्रामाणिक बातों तथा घटनाओं के वर्णन हेतु प्रतिबद्ध है।
5. आंबेडकरवादी साहित्य तथागत बुद्ध की प्रेरक वाणी ' बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय, लोकानुकंपाय' पर आधारित है। 'मूलनिवासी' अथवा 'पंद्रह-पचासी' की अवधारणा से इसका कोई संबंध नहीं है।
6. आंबेडकरवादी साहित्य में हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के सम्यक साहित्य को सम्मिलित किया जा सकता है, चाहे उसका रचनाकार किसी भी वर्ग, किसी भी जाति, किसी भी धर्म का हो।
7. आंबेडकरवादी साहित्य भारतीय संविधान में वर्णित सम्यक प्रावधानों के अनुरुप रचा जाने वाला साहित्य है।
8. आंबेडकरवादी साहित्य किसी धर्म अथवा दर्शन की निंदा नहीं करता है, बल्कि आवश्यकता पड़ने पर उनका सम्यक विवेचन करता है।
9. आंबेडकरवादी साहित्य में तथागत बुद्ध, संत कबीर, संत रविदास, संत गाडगे, नारायण गुरु, पेरियार रामास्वामी, ज्योतिराव फुले एवं डॉ. आंबेडकर आदि सत्यशोधक महापुरुषों की सम्यक वाणी का अंतर्भाव है।
10. आंबेडकरवादी साहित्य आंबेडकरवादी चेतना के साहित्यकारों, शिक्षकों, समाजसेवकों एवं संस्कृति के संरक्षकों का प्रशस्ति-पत्र है।

संरक्षक -
डॉ0 आर0एम0 राव 'मनोहर', बरेली
श्यामलाल राही 'प्रियदर्शी', बरेली
रघुवीर सिंह 'नाहर', राजस्थान

संपादक -
देवचंद्र भारती 'प्रखर'
मो.- 9454199538
ambedkarvadisahitya@gmail.com

संपादक मंडल-
डॉ0 मुकुन्द रविदास (सहायक प्राध्यापक)
हिन्दी विभाग, वी.बी.एम. कोयलांचल वि.वि., धनबाद, झारखण्ड
डॉ0 गाजुला राजू (सहायक प्राध्यापक)
हिन्दी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश
डॉ0 प्रीति आर्या (प्राध्यापक)
हिन्दी विभाग, एस.एस.जे. विश्वविद्याल परिसर, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड
डॉ0 दुर्गेश कुमार राय (सहायक प्राध्यापक)
हिन्दी विभाग, के.जी.के. कॉलेज,
मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश
डॉ0 प्रवेश कुमार (सहायक प्राध्यापक)
हिन्दी विभाग, शहीद हीरा सिंह राजकीय महावि. धानापुर, चन्दौली, उत्तर प्रदेश

संपादकीय कार्यालय -
शी 19/100, भीम नगर कालोनी
सनबीम वरुणा के पास, कचहरी
वाराणसी (उ.प्र.) 221002

स्वामी एवं प्रकाशक देवचंद्र भारती,
मुद्रक गौतम प्रिंटर्स, सी.27/111-बी,
जगतगंज, वाराणसी, (उ.प्र.)-221002 से
मुद्रित एवं शी 19/100, भीम नगर कालोनी
सनबीम वरुणा के पास, कचहरी, वाराणसी
(उ.प्र.) 221002 से प्रकाशित
संपादक- देवचंद्र भारती।

आंबेडकरवादी साहित्य

आंबेडकर दर्शन पर आधारित त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका

वर्ष-4, संयुक्तांक, जनवरी-जून 2024

संपादकीय :
महाकवि एल.एन. सुधाकर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व /02

विचार/वक्तव्य :
महाकवि एल एन सुधाकर- आंबेडकरवादी मिशन के एक सशक्त योद्धा - डॉ. राम मनोहर राव / 04

आंबेडकरवादी साहित्य की रुपरेखा
- एल.एन. सुधाकर / 07

लेख/आलेख :
सौम्यता और शालीनता की प्रतिमूर्ति हैं महाकवि सुधाकर जी
- डॉ. जयप्रकाश कर्दम / 09

महाकवि एल.एन. सुधाकर के काव्य में आंबेडकरवादी चिंतन का स्वरूप - देवचंद्र भारती 'प्रखर' / 11

संस्मरण :
एक महाकवि : दो मुलाकातें - देवचंद्र भारती 'प्रखर' / 15

साक्षात्कार :
देवचंद्र भारती 'प्रखर' के प्रश्न और महाकवि एल.एन. सुधाकर के उत्तर - देवचंद्र भारती 'प्रखर' / 17

प्रशस्ति काव्य :
आदरणीय सुधाकर जी पर कुंडलियाँ
- रघुबीर सिंह 'नाहर' / 21

कवि परिचय :
महाकवि एल.एन. सुधाकर का संक्षिप्त परिचय / 23

कविताएँ :
एल.एन. सुधाकर का काव्य-साहित्य / 29

पुस्तक समीक्षा :
उत्पीड़न की यात्रा कविता संग्रह की समीक्षा
- डॉ. राम मनोहर राव / 37

संपादकीय

महाकवि एल.एन. सुधाकर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

अपने लिखे जैसा नहीं जो कर सके,
वह क्यों लिखे, उसको नहीं अधिकार है।

गज़ल-संग्रह 'लज्जत-ए-अलम' में संग्रहीत इस शेर का भावार्थ यह है कि जो साहित्यकार अपने लिखे हुये जैसा कार्य नहीं कर सकते हैं, उन्हें लिखने का कोई अधिकार नहीं है। किंतु ऐसे साहित्यकारों की भरमार है, जो लिखते कुछ और हैं, करते कुछ और हैं। साहित्यकार वही है, जो साहित्य का सृजन करता है। 'साहित्य' के मूल में 'सहित' (स+हित) शब्द है। जिससे मानव-समाज, देश और विश्व का हित हो, वही साहित्य है। समाज का अहित करने वाला 'साहित्य' नहीं, बल्कि 'आहित्य' है। वर्तमान में इस प्रकार का साहित्य अत्यधिक मात्रा में उपलब्ध है, जो समाज में अंधविश्वास, पाखंड, कर्मकाण्ड, मूर्तिपूजा, नायक पूजा, धर्मांधता, अश्लीलता, विघटन, वैमनस्यता, समुदायवाद, जातिवाद, लिंगवाद आदि को बढ़ावा दे रहा है। ऐसे समय में भी सम्यक साहित्य का सृजन करने वाले कुछ साहित्यकार हैं, जो अत्यंत दुर्लभ हैं। उन्हीं दुर्लभ साहित्यकारों में एक साहित्यकार हैं- महाकवि एल.एन. सुधाकर जी।

महाकवि एल.एन. सुधाकर का पूरा नाम लक्ष्मी नारायण सुधाकर है। अपने जीवन के युवाकाल में आंबेडकरवाद से प्रभावित होने के उपरान्त इन्होंने अपने नाम में निहित हिंदू देवी-देवता के नाम वाले शब्दों को संक्षिप्त रूप दे दिया। इनके पूर्वज कबीरपंथी थे, इसलिए आंबेडकरवाद को समझने में इन्हें अधिक कठिनाई नहीं हुई। क्योंकि कबीर के दार्शनिक सिद्धान्त तथागत बुद्ध के दार्शनिक सिद्धान्त से सम्बन्धित हैं और बाबा साहेब डॉ. आंबेडकर के दार्शनिक सिद्धान्तों का भी तथागत बुद्ध के दार्शनिक सिद्धान्तों से घनिष्ठ सम्बन्ध है। आंबेडकरवाद को समझना सामान्य व्यक्तियों के वश की बात नहीं है। लेकिन जब आंबेडकरवाद की हवा चारों ओर बहने लगी, तो सामान्य से सामान्य व्यक्ति भी अपने आपको गर्व से आंबेडकरवादी कहने लगा। इस कारण से आंबेडकरवाद के संबंध में जनमानस में अनेक भ्रम व्याप्त हैं। आंबेडकरवाद का भ्रम सामान्य व्यक्तियों के अतिरिक्त साहित्यकारों में भी देखने को मिलता है। ऐसे बहुत से साहित्यकार हैं, जो स्वयं को आंबेडकरवादी कहते हैं। जबकि उन्हें ठीक से आंबेडकरवाद का क, ख, ग भी नहीं पता है। महाकवि एल.एन. सुधाकर जी एक ऐसे साहित्यकार हैं, जो केवल आंबेडकरवारद की पूरी वर्णमाला ही नहीं जानते हैं, बल्कि इन्हें आंबेडकरवाद का व्याकरण, आंबेडकरवाद का भाषा-विज्ञान, आंबेडकरवाद का इतिहास, आंबेडकरवाद का भूगोल, आंबेडकरवाद का सामाजिक विज्ञान आदि सब भलीभाँति पता है।

महाकवि एल.एन. सुधाकर ने आंबेडकरवादी चेतना से परिपूर्ण दो महाकाव्यों की रचना की है- 'बुद्ध सागर' और 'भीमसागर' इन महाकाव्यों के अतिरिक्त सुधाकर जी के अन्य काव्य-संग्रह हैं- 'उत्पीड़न की यात्रा', 'आंबेडकर-शतक', 'प्रबुद्ध भारती', 'वामन फिर आ रहा है'। बौद्ध धम्म और आंबेडकर-दर्शन के मूल सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए महाकवि एल.एन. सुधाकर ने मानव कल्याण हेतु सुंदर एवं सरस काव्य का सृजन किया है। प्रज्ञा, करुणा, शील, प्रेम और मैत्री के संदेश को जन-जन तक पहुँचाना ही इनके काव्य का प्रयोजन है। आंबेडकरवादी साहित्य के इस पुरोधा साहित्यकार में अनेक साहित्यिक, धाम्मिक एवं सामाजिक विशेषताएँ प्रबल रूप में विद्यमान हैं। फिर भी इस महान साहित्यकार की उपेक्षा की गयी है। सुधाकर जी के साहित्य पर न तो अभी तक कोई शोध-कार्य हुआ है और न ही इनके साहित्य पर कोई समीक्षात्मक/आलोचनात्मक पुस्तक लिखी गयी है। 'आंबेडकरवादी साहित्य' पत्रिका का यह वर्तमान अंक महाकवि एल.एन. सुधाकर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से संबंधित इस प्रकार के अभाव की पूर्ति का एक प्रारंभिक प्रयास है।

प्रस्तुत अंक में महाकवि एल.एन. सुधाकर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से संबंधित विचार, लेख, शोध-पत्र, साक्षात्कार, संस्मरण तथा इनके प्रतिनिधि काव्य का संकलन किया गया है। आशा है, यह अंक पूर्व अंकों की भाँति आंबेडकरवादी साहित्य के पाठकों को पसंद आएगा तथा शोधार्थियों एवं समालोचकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

- देवचंद्र भारती 'प्रखर'

महाकवि एल.एन. सुधाकर को स्मृति-चिन्ह एवं आंबेडकरवादी साहित्य सम्मान भेंट करते हुए GOAL के पदाधिकारी एवं सदस्यगण।

विचार

डॉ. राम मनोहर राव
बरेली, उत्तर प्रदेश
मो. 94112235

महाकवि एल एन सुधाकर- आंबेडकरवादी मिशन के एक सशक्त योद्धा

सृजन प्रकृति का नैसर्गिक गुण है। सजीवों का एक प्रमुख गुण होता है प्रजनन अर्थात सृजन और यही विशेषता सजीव को निर्जीव से पृथक करती है। इस सृजन (प्रजनन) में नर और मादा का संयुग्मन आवश्यक है। अतः मानव समाज में नर और मादा अर्थात पुरुष और नारी दोनों का बराबर का योगदान होता है। इस प्रकार प्रकृति ने ही समता का सिद्धान्त एवं दोनों की व्यवहारिक उपयोगिता को निरूपित कर रखा है।

सृजन का एक और महत्त्वपूर्ण उदाहरण है साहित्य सृजन। मेरी दृष्टि में साहित्य सृजन प्रकृति में जीवधारियों के जैविक प्रजनन पद्धति से कहीं अधिक कठिन एवं महत्वपूर्ण होता है। दर असल प्रजनन एक प्राकृतिक रूप से स्वतः संचालित जैविक प्राक्रियाओं का अद्‌भुत सुमेल है और उसमें दो व्यक्तियों (नर एवं मादा) का योगदान होता है, जबकि साहित्य सृजन व्यक्तिगत होता है और उसका सृजन नितान्त एक ही व्यक्ति को करना होता है। साहित्य सृजन से उस व्यक्ति विशेष का अस्तित्व एवं उसकी प्रास्थिति होती है। उसके सृजन में उसके अपने ज्ञान और उसकी संवेदनशीलता परिलक्षित होती है।

हरेक व्यक्ति साहित्य का सृजन नहीं कर सकता है। अपने आस-पास के सजीव एवं निर्जीव वस्तुओं को देखने का उसका दृष्टिकोण उसकी संवेदनशीलता पर निर्भर करता है। व्यक्ति का मस्तिष्क वही देखने में सक्षम होता है, जिसका उसे ज्ञान है। अर्थात प्रज्ञा भी एक वह गुण है। जो साहित्य सृजन में महत्वपूर्ण कारक है। शिक्षा से ज्ञान और ज्ञान से विवेक उपजता है। विवेक ही व्यक्ति का चारित्रिक निर्माण करता है। उसकी संवेदनशीलता को एक दिशा प्रदान करता है, एक दृष्टिकोण स्थापित करता है और एक तरह से उस व्यक्ति का व्यक्तित्व निर्धारण होता है।

साहित्य और समाज के मध्य गहरा संबंध होता है। यदि साहित्य समाज का दर्पण है, तो सामाजिक सरोकार ही साहित्य सृजन के अभिप्रेरक होते हैं। सामाजिक सरोकारों के सापेक्ष जो साहित्य सृजित किया जाता है, समाज में उसी की स्वीकार्यता अधिक होती है।

साहित्यकार की दृष्टि में जितना पैनापन होता है, उतना ही उसका साहित्य भी मानवोचित एवं कल्याणकारी होगा। उसकी सामाजिक उपयोगिता भी उतनी अधिक होगी। यद्यपि शिक्षा से ही ज्ञान की वृद्धि संभव है, परंतु कल्पनाशीलता, संवेदनशीलता चारित्रिक दृष्टिकोण, सामाजिक एवं पर्यावरणीय कारकों पर भी निर्भर होता है- साहित्यिक सृजन। प्रत्येक व्यक्ति की पसंद नापसंद अलग-अलग हो

सकती है, परंतु सामाजिक एवं समसामयिक परिदृश्यों को वह नकार या नजरअंदाज नहीं कर सकता।

हिन्दी साहित्य भी गद्य या पद्य में होता है। मनोरंजन, बुद्धिविलासिता प्रदर्शित करने हेतु भी साहित्य लिखा जाता है। परंतु उसकी उपयोगिता और लोकप्रियता उसी के अनुरूप गुणों वाले व्यक्तियों के मध्य ही होगी, जबकि सामाजिक सरोकारों के सापेक्ष जो साहित्य सृजित किया जाता है, उसका उद्देश्य लोकहित अर्थात मानव कल्याण होता है।

साहित्य सृजन में रचनाकार की जहाँ बुद्धि, ज्ञान विवेक, संवेदनशीता, सृजनशीलता आदि सभी गुणों का सीधा संबंध है, वहीं उसके मन-मस्तिष्क की प्रकृति और उसकी रूचियों पर भी निर्भर करता है। व्यक्ति कोई निर्णय मस्तिष्क अथवा मनोभावों से अथवा मन-मस्तिष्क दोनों से लेता है। संभवतः यही कारण है कि कवि-लेखक अधिकांशतः भावुक होते हैं और कल्पनाशील भी। अतः किसी साहित्यकार के सृजन में ज्ञान और मनोभाव दोनों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। किसी साहित्यकार के मनोभाव प्रभावित होते हैं उस व्यक्ति में अर्न्तनिहित माता पिता के गुण एवं उनसे प्राप्त संस्कारों द्वारा। वैसे संस्कार अपने मित्र, रिश्तेदार अथवा किसी आदर्श महापुरुष के दर्शन, उनके व्यक्तित्व और कृतित्व से प्राप्त हो सकते हैं, जैसे डा. आंबेडकर ऐसे ही आदर्श महामानव हैं।

एक वरिष्ठ साहित्यकार, जो बुद्ध और महामानव डा. आंबेडकर के दर्शन के प्रबल अनुयायी ही नहीं, बल्कि उन्हीं के सिद्धान्तों पर ही उनका संपूर्ण साहित्य आधारित है और वह हैं जनपद मैनपुरी (उ0प्र0) के एक गाँव में 15 मई, 1938 को जन्में श्रद्धेय लक्ष्मी नारायण सुधाकर जी। उन्होंने हिन्दी आनर्स (प्रभाकर) की डिग्री पंजाब विश्वविद्यालय से तथा स्नातक की डिग्री मेरठ विश्वविद्यालय से प्राप्त की। वे भारत सरकार के उद्योग मंत्रालय में कार्यरत रहे एवं अनुसंधान अधिकारी (प्रथम श्रेणी) से 1996 में सेवानितृत्त हुए। वे भारतीय दलित साहित्य मंच दिल्ली के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। आप वर्तमान में दिल्ली में रह रहे हैं। यह सुखद संयोग है कि गोल के अध्यक्ष के तौर पर मुझे स्वयं अपनी संस्था के महासचिव देवचंद्र भारती प्रखर जी एवं अन्य सदस्यों सहित उनके आवास पर वर्ष 2022 में उनसे मुलाकात करने का अवसर मिला। धम्म के प्रबल अनुयायी ही नहीं धम्म प्रचारक होने के साथ-साथ स्वयं पंचशील का अक्षरशः पालन करने वाले एवं करुणा, मैत्री की जीती-जागती मिसाल से मिलकर हम अभिभूत हुए।

आदरणीय सुधाकर जी से मिलकर उनके व्यक्तित्व से हम सभी अत्यंत प्रभावित हुए। सादगी और सहज जीवन जीने वाले प्रत्यक्ष व्यवहार रूप में वैसे ही मिले जैसे बुद्ध के अनुयायी एवं आंबेडकर वैचारिकी के प्रबल संवाहक से अपेक्षा थी, बल्कि उनके सहज स्नेहिल स्वभाव ने उनके प्रति हमारा दृष्टिकोण एक मार्गदर्शक और संरक्षक के रूप में बदल दिया।

कथनी और करनी की एकरूपता उनके व्यक्तित्व से साफ झलकती है। समता, स्वतंत्रता, न्याय, बंधुता प्रेम की वह जीता जागती मिसाल हैं और यही गुण उन्हें विशिष्ट श्रेणी में खड़ा करते हैं। प्रायः उन्हें काव्य पाठ हेतु आकाशवाणी बुलाया जाता था। जहाँ तक उनके साहित्य सृजन की श्रृंखला में अब तक प्रकाशित रचनाओं में बुद्ध और बोधिसत्त्व आंबेडकर (संपादित), भीमसागर (प्रबंध काव्य), उत्पीड़न की यात्रा (कविता संग्रह, आंबेडकर शतक (काव्य), बुद्ध सागर (महाकाव्य), वामन फिर आ रहा है (कविता संग्रह), प्रबुद्ध भारती (कविता संग्रह) आदि

हैं। अतः स्पष्ट है कि वे पूर्णतया आंबेडकरवादी साहित्य सृजित करते रहे, जो उन्हें महाकवि के रुप में मान्यता प्रदान करने के लिए प्रर्याप्त है। विशेषकर उनकी रचनाओं की विषयवस्तु एवं काव्यकला विशेष रुप से उल्लेखनीय हैं। उनकी रचनाओं में समता, स्वतंत्रता, न्याय, बन्धुता, प्रेम भरपूर देखने को मिलता है।

आज भी वयोवृद्ध एवं रुग्ण होने के बावजूद लेखन कार्य कर रहे हैं। जितने वे मृदुल स्वभाव के है, उनमें सामाजिक असमानता के कारण होने वाले अन्याय के प्रति आक्रोश है, जो उनकी तमाम रचनाओं में उजागर हो रहा है। वे सभी का उत्साह वर्धन बिना किसी तरह का भेद-भाव के करते रहते हैं और यही उन्हें श्रेष्ठ एवं विशिष्ट श्रेणी का मानव एवं उच्च श्रेणी का साहित्यकार तथा आंबेडकरवादी मिशन का पुरोधा साबित करता है। उन्हें अनेक संस्थाओं और मंचों से सम्मानित किया गया, जिसके वे सर्वथा योग्य हैं।

आंबेडकरवादी साहित्यकारों के वैश्विक संगठन GOAL द्वारा उन्हें वर्ष 2022 हेतु 'आंबेडकरवादी साहित्य सम्मान' से विभूषित करने पर संस्था स्वयं सम्मानित एवं गौरवान्वित हुई। विशेष रुप से बतौर गोल का अध्यक्ष मैं भी सम्मानित एवं आजीवन गौरवान्वित महसूस करता रहूँगा।

महाकवि एल.एन. सुधाकर की पुस्तकों का विमोचन करते हुए (बायें से) GOAL के सदस्य रघुवीर सिंह नाहर कर्मशील भारती, अध्यक्ष डॉ. राम मनोहर राव एवं महासचिव देवचन्द्र भारती 'प्रखर'

वक्तव्य

एल.एन. सुधाकर
शाहदरा, दिल्ली
मो. 9582113814

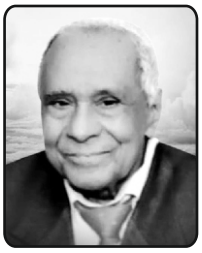

आंबेडकरवादी साहित्य की रुपरेखा

सर्वविदित है कि समय के थेपेड़ों से समाप्त प्राय हो चुके बौद्ध धम्म को भारत में पुनः प्रतिष्ठापित करने का श्रेय बाबा साहेब डॉ. आंबेडकर को जाता है। डॉ. आंबेडकर को आधुनिक बोधिसत्व माना जाता है। हजारों वर्षों के उपरान्त भारत में बौद्ध धम्म की पताका फहराने वाले डॉ. आंबेडकर के बराबर भारत में कोई भी सर्वोच्च शिक्षा प्राप्त स्वतंत्र चिन्तक नहीं था।

''बुद्ध सदियों तलक प्रवासी रहे।
भूले गौतम को भारतवासी रहे।।
लौटा लाए तथागत को धाम बाबा।
तुम को शत् शत् नमन प्रणाम बाबा।।''

भारतीय संविधान के निर्माता बाबा साहेब डा. आंबेडकर ने संविधान में पाली के अध्ययन का प्रावधान रखा। राष्ट्रपति भवन के प्रमुख द्वार पर अशोक चक्र को भारत का राष्ट्रीय प्रतीक स्वीकार करवाया। भारत ने उन्हीं के प्रयासों को महत्व दिया और बुद्ध जयन्ती का सार्वजनिक अवकाश घोषित किया। बाबा साहेब ने अपने आप को बौद्ध धम्म के प्रचार-प्रसार के लिए पूरी तरह समर्पित कर दिया था। बाबा साहेब ने भगवान बुद्ध के सर्वोच्च आदर्श जीवन और दर्शन पर सरल सरस भाषा में एक पुस्तक ''बुद्धा एण्ड हीज धम्म'' लिखी। उनके अनन्य सहयोगी भदन्त डा.आनन्द कौशल्यायन जी ने हिन्दी में सुन्दर सरस शैली में 'बुद्ध और उनका धर्म' अनुवाद कर हिन्दी भाषी शिक्षित-अशिक्षित आम लोगों तक बुद्ध धम्म की शिक्षाओं को समझने और तदनुसार मानने के लिए उत्साहित किया। निसंदेह भदन्त डा. आनन्द कौशल्यायन जी बौद्ध धम्म के प्रचार-प्रसार में चार चाँद लगा दिये। यह भी माना जाता है कि उनकी दो पुस्तकें 'भारत में क्रान्ति तथा प्रतिक्रान्ति' और 'बुद्ध तथा कार्लमार्क्स' महाराष्ट्र सरकार ने प्रकाशित की, जो बौद्ध धम्म के प्रसार-प्रसार और विस्तार में बहुत ही सहायक महत्वपूर्ण सिद्ध हुई।

अक्टूबर सन् 1935 में डा. बाबा सहेब आंबेडकर ने यह भीम प्रतिज्ञा की थी कि हिन्दू होकर पैदा होना मेरे वश की बात नहीं थी, परन्तु मैं हिन्दू रहकर मरुँगा नहीं, यह मेरे वश में है। तदनुसार इक्कीस वर्ष के पश्चात चौदह अक्टूबर उन्नीस सौ छप्पन में अशोक विजय दशमी के दिन नागपुर में वर्तमान दीक्षा भूमि के विशाल प्रांगण में अपने पाँच लाख अनुयायियों के साथ कुशीनगर के वयोवृद्ध बौद्ध भिक्षु संघनायक भदन्त चन्द्रमणि महाथेरा से विधिवत बौद्ध धम्म की दीक्षा लेकर अपने अनुयायियों को बाइस प्रतिज्ञाओं के साथ स्वयं दीक्षा देकर भारत में धम्म चक्र चलाकर बौद्ध धम्म का पुनरुद्धार किया। दूसरे दिन भी भदन्त आनन्द कौशल्यायन के साथ अन्य पाँच लाख लोगों को बाइस प्रतिज्ञाओं के साथ दीक्षित किया। डॉ. आंबेडकर के अभिन्न मित्र राहुल सांकृत्यायन ने कहा

था कि डॉ. आंबेडकर ने भारत में बौद्ध धर्म का ऐसा गहरा खम्बा गाड़ दिया है, जिसे अब कोई हिला नहीं सकता।

बाबा साहेब ने कहा था कि धर्म परिवर्तन का यह मतलब नहीं कि मिट्टी से निकलकर स्वर्ग की फुलवारी में पहुँच जायेगें, बल्कि उन्हें समानता और स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करना पड़ेगा। किसी ने ठीक ही कहा है कि जीवन के सभी निर्णय हमारे नहीं होते, कुछ निर्णय प्रकृति के और कुछ समय के अधीन होते हैं।

डॉ. आंबेडकर के पत्रकार लेखक मित्र गणेश मंत्री जी ने स्पष्ट किया था कि आंबेडकर की भाषा और प्रतिपादन शैली पूर्णतया ऐतिहासिक, तथ्यपरक और तार्किक थी। वे जीवन की वास्तविकताओं को उभारते थे। इतिहास व समाज के ठोस याथार्थ को उखाड़कर रखते थे। वे दलितों को सत्ता में भागीदारी के लिए प्रेरित करते थे। दया या करुणा नहीं, स्वाभिमान को जगाते थे। निःसंदेह हमें दया या करुणा नहीं चाहिए, हमें स्वाभिमान और सम्मान से जीने के लिए संघर्ष करना ही पड़ेगा। आंबेडकरवादी कवयित्री पुष्पा विवेक का मानना है कि जुल्म इतना बड़ा नहीं, जितनी खामोशी है। बोलना सीखो, नहीं तो पीढ़ियाँ गूँगी हो जायेंगी।

आंबेडकरवादी साहित्य पत्रिका के सम्पादक आयुष्मान देवचन्द्र भारती 'प्रखर' ने अप्रैल से जून 2024 अंक, मेरे व्यक्तित्व और कृतित्व पर निकालने की सार्वजनिक सूचना सभी स्नेही मित्रों को भेजी और मेरे ऊपर लेख, समीक्षा, कविता आदि भेजने का आग्रह किया है। 'प्रखर' जी पर मुझे गर्व है। वह जो भी कार्य हाथ में लेते हैं, पूरा करके दिखाते हैं। उन सभी कवियों, साहित्यकार, कल्याण मित्रों का मैं विशेष आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने स्नेहपूर्वक दो शब्द इस परमोपयोगी, जन कल्याणकारी पत्रिका में प्रकाशित करने के लिए भेजे हैं। अस्वस्थ होने के कारण इतना लेखन पुत्र अरुण सुधाकर के सहयोग के बिना सम्भव नहीं था। इस महती लेखन में अरुण सुधाकर का सहयोग सराहनीय रहा।

महाकवि एल.एन. सुधाकर जी के निवास स्थान पर (बायें से) GOAL के सदस्य
कर्मशील भारती, अध्यक्ष डॉ. राम मनोहर राव, महासचिव देवचन्द्र भारती 'प्रखर' एवं सदस्य रघुवीर सिंह नाहर

लेख

डॉ. जयप्रकाश कर्दम
दिल्ली
मो. 9871216298

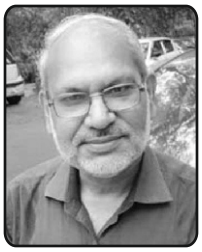

सौम्यता और शालीनता की प्रतिमूर्ति हैं महाकवि सुधाकर जी

हिन्दी आंबेडकरवादी साहित्य में वरिष्ठ कवि लक्ष्मी नारायण सुधाकर जी की पहचान एक सौम्य संतुलित और सुलझे हुए कवि के रूप में है, जिसमें न अति-आक्रोश है, न सहनशीलता, न वे उदासीन हैं, न अति-उत्साही। उनकी सोच का यह संतुलन उनके व्यक्तित्व और कवि रुप दोनों को अलग पहचान देता है। सुधाकर जी की एक विशेषता यह है कि उनमें न तो वरिष्ठता का दम्भ है, न विद्वता के बोझ से दबे हैं और न ही वंचना के शिकार हैं। वह निरंतर सीखते हैं और सीखने की कोशिश करते हैं। सौम्यता और शालीनता उनके व्यक्तित्व और सृजन का सबसे बड़ा गुण है। फतवे और नारों के शोर के बीच सुधाकर जी अत्यंत संयम और शालीनता से सिर्फ अपनी बात कहते हैं और शहर के कोलाहल के बीच कोई संगीतकार अपने संगीत की स्वर-लहरियों के कोलाहल को तोड़ने की कोशिश करता है। गोष्ठियों और बहसों की गहमागहमी से दूर प्रायः एकांतवास में रहने वाले सुधाकरजी गुमनाम से लगते हैं। इस कारण कई अवसरों पर वह उपेक्षित या विस्मृत भी कर दिए जाते हैं या हो जाते हैं, किन्तु अपनी सृजनशीलता से वह अपनी ऊर्जायुक्त उपस्थिति का अहसास कराते हैं।

समाज की विसंगतियों और विद्रूपताओं को सुधाकर जी ने अपनी खुली आँखों से देखा है और उसमें दर्द को महसूस किया है, चाहे वे विसंगतियाँ वर्ण या जातिगत व्यवहार की हों या आर्थिक शोषण की। धर्म, संस्कृति से लेकर राजनीति और अर्थतंत्र तक की विसंगतियों को वह अच्छी तरह समझते हैं और समाज को भी इन विसंगतियों के दुष्प्रभाव से सावधान करते हैं। धर्म, कर्म और मर्म जहाँ सब कुछ विघटन में डूबा है। ऐसे में कवि सुधाकर के दर्द को समझा जा सकता है, जो एक सवाल के रूप में उनकी कविता में अभिव्यक्त हुआ है- 'सब में समचिर सहयोग रहे, वह स्रोत कहाँ से पाऊँ'।

ऐसा नहीं है कि सुधाकर जी को समानता के स्रोत के बारे में कोई जानकारी नहीं है। वह अच्छी तरह जानते हैं कि वर्ण-जाति का भेदभाव सामाजिक समता के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा है। इस भेदभाव के रहते समाज में समता नहीं आ सकती। समता लोकतंत्र का सबसे बड़ा मूल्य है। समता-रहित समाज में लोकतंत्र का विकसित होना कठिन है। सुधाकरजी का कवि इस सच्चाई को समझता है, इसीलिए वह कहते हैं-

''वर्ण-जाति के भेद-भाव से जब होगा छुटकारा,
वेगवती होगी भारत में लोकतंत्र की धारा।''

भेदभाव की समाजिक परम्परा ने दलितों-शोषितों को सदैव समाज के हाशिए पर रखा है। अनेक मानवीय अधिकारों तक से वंचित इस वर्ग का जीवन अभाव और अवरोधों से ग्रस्त है। दलितों के समक्ष

समस्याओं का अंबार है। समय के साथ समस्याओं के रुप बदले हैं। बदले परिवेश में नयी तरह की चुनौतियाँ समाज के समक्ष उपस्थित हुई हैं। सुधाकरजी इन चुनौतियों को अच्छी तरह समझते हैं। वह सही कहते हैं जब वे कहते हैं- 'जीना है मुश्किल शोषितों का आज के परिवेश में'।

सुधाकर जी निजीकरण को दलित-हितों पर एक आघात के रूप में देखते हैं। विशेष रुप में शिक्षा के क्षेत्र में बढ़ते निजीकरण को लेकर वह अत्यधिक चिंतित हैं। उनका मानना है कि-

''निजी क्षेत्र में शिक्षा इतनी महँगी जब हो जाएगी।
निर्धन जनता बच्चों को तब पढ़ा-लिखा क्या पाएगी।''

वंचित वर्ग सामाजिक न्याय और समानता की प्राप्ति के लिए संघर्ष कर रहा है। संघर्ष का रास्ता सीधा और सरल नहीं होता, इसमें कई प्रकार के अवरोध होते हैं। संघर्ष का रास्ता कहीं कंकरीला-पथरीला है, तो कहीं ऊबड़-खाबड़। कहीं इसमें दलदल है, तो कहीं झाड़-झंखाड़। संघर्ष के इस दुर्गम, कठिन मार्ग से गुजरकर ही वंचितों को अपनी मंजिल तक पहुँचना है और वे इसके लिए कटिबद्ध हैं। वंचितों का यह बहु-आयामी संघर्ष सड़क से संसद तक है। सुधाकर जी ने इस संघर्ष को अपनी कविताओं में सार्थक अभिव्यक्ति दी है।

कवि सुधाकर की चिंता यह है कि यहाँ दलित-शोषितों के दर्द को कोई सुनने समझने वाला नहीं है। किससे क्या उम्मीद रखी जाए। इसीलिए वह कहते हैं- 'गूंगे-बहिरों की महफिल में किसको फरियाद सुनाऊँ।'

लोकतंत्र का एक बहुत बड़ा आधार होने के कारण स्वतंत्रता बहुत बड़ा सामाजिक और राष्ट्रीय मूल्य भी है। स्वतंत्रता एक अनुभव है। लेकिन वंचित वर्ग स्वतंत्रता के अनुभव से प्रायः वंचित है। वंचित लोग स्वतंत्रता से वंचित क्यों हैं? सुधाकर जी की कविता यह प्रश्न उठाती है-

सभी समस्याओं के तालों की जो ताली थी,
कहाँ गयी वह आजादी जो आने वाली थी।

सुधाकर जी द्वारा यह दूसरा कविता संगह है। सरल-सहज भाषा में लिखी कविताएँ अपना प्रभाव छोड़ती हैं। पुस्तक का शीर्षक 'वामन फिर आ रहा है' प्रतीकात्मक है। वामन सभी प्रकार के छल-कपट, धोखेबाजी, मक्कारी, शोषण, हिंसा का प्रतीक है। और ये सब ब्राह्मणवाद का प्रतीक भी है। कवि सुधाकर जब समाज को वामन से सावधान करते हुए कहते हैं कि 'वामन फिर आ रहा है', तो वह समाज को यह बताना चाहते हैं कि वामन समाज के बीच मौजूद है। वह स्वयं को अलग-अलग आवरणों में ढकता-छुपाता रहा है। आज वह निजीकरण के रूप में वंचितों का सब कुछ हड़प रहा है।

सुधाकरजी की सौम्यता का मैं निरन्तर कायल रहा हूँ और उसके समक्ष नत मस्तक होता हूँ। उनकी निरंतर रचनात्मक सक्रियता युवा पीढ़ी को प्रेरणा देने वाली है। इस अवसर पर मेरी कामना है कि सुधाकरजी शतायु हों और अच्छी सृजनात्मक सक्रियता से साहित्य और समाज को समृद्ध करते रहें।

आलेख

देवचंद्र भारती 'प्रखर'
चन्दौली, उत्तर प्रदेश
मो. 9454199538

महाकवि एल.एन. सुधाकर के काव्य में आंबेडकरवादी चिंतन का स्वरूप

आंबेडकरवादी चिंतन का आरंभ डॉ. भीमराव आंबेडकर के जीवनकाल में ही हो गया था। जब डॉ. आंबेडकर ने 14 अक्टूबर 1956 को बौद्ध धम्म की दीक्षा ग्रहण की, तो उनके साथ लाखों वंचित लोगों ने भी धर्मान्तरण किया। डॉ. आंबेडकर ने बौद्ध धम्म को इसलिए अपनाया, क्योंकि बौद्ध धम्म में समता, स्वतंत्रता, बंधुत्व, मैत्री, शील आदि विशेषताएँ हैं। इसके अतिरिक्त बौद्ध धम्म में ईश्वर और आत्मा के लिए कोई स्थान नहीं है। यही कारण है कि बौद्ध धम्म वैज्ञानिक दृष्टि से सम्पन्न है। बौद्ध धम्म में शामिल ये सभी विशेषताएँ ही आंबेडकरवादी चिंतन का आधार हैं। 'बुद्ध सागर' और 'भीम सागर' नामक महाकाव्यों की रचना करने वाले महाकवि एल.एन. सुधाकर एक बौद्ध-आंबेडकरवारदी विचारधारा के साहित्यकार हैं। उनकी कविता की एक-एक पंक्ति में आंबेडकरवादी चेतना समाहित है। इसका कारण यह है कि महाकवि सुधाकर जी ने अपनी किशोरावस्था से लेकर वर्तमान अवस्था (85 वर्ष की आयु) तक धम्मानुसार जीवन व्यतीत किया है। आंबेडकरवादी चेतना केवल उनकी कविताओं में ही नहीं, बल्कि उनके विचार और व्यवहार में भी परिलक्षित होती है। महाकवि सुधाकर जी की दृष्टि में अत्यंत स्पष्टता है। उन्होंने अपनी कविताओं में अपनी आंबेडकरवादी चेतना और धम्मानुकूल विचारों को हृदय खोलकर प्रकट किया है। महाकवि सुधाकर जी ने अपनी कविता 'उत्पीड़न की यात्रा' में वंचित-वर्ग के लोगों को डॉ. भीमराव आंबेडकर के मार्ग पर चलने तथा बौद्ध धम्म ग्रहण करने के लिए प्रेरित किया है। यथा-

बोधिसत्व ने दलितों को अंतिम संदेश दिया था।
बौद्ध धर्म अपनाने का सबको आदेश दिया था।।
अनाचार, आतंकवाद यदि चाहे आज मिटाना।
बुद्ध भूमि पर पुनः बुद्ध की शरण में होगा जाना।।
(1)

15 अगस्त 1947 को भारतवर्ष ब्रिटिश शासन से मुक्त हुआ। कहा जाता है कि समस्त भारतीय स्वतंत्र हुये, लेकिन महाकवि सुधाकर जी इस बात का विरोध करते हैं। उनका मानना है कि भारत के बहुसंख्यक लोग अभी भी पराधीन हैं। छुआछूत और जातिगत भेदभाव की परंपरा का अभी भी पालन किया जाता है और बहुसंख्यक लोगों को प्रताड़ित किया जाता है। महाकवि सुधाकर जी ने अपनी कविता 'आजादी' में आजादी को 'महल वालों की रानी' कहा है। उनके ऐसा कहने का आशय यह है कि सन् 1947 में संपूर्ण भारत स्वतंत्र नहीं हुआ, बल्कि यहाँ के पूँजीपति ही स्वतंत्र हुये। यथा-

छुआछूत की परंपरागत अब तक रीति चली आती है।
जाति, वर्ग की खाई चौड़ी दिन पर दिन होती जाती है।।

झोपड़ियों तक आने वाली आजादी की यही कहानी।

निकल फिरंगी के चंगुल से बनी महल वालों की रानी॥(2)

महाकवि सुधाकर जी विषमता, द्वेष और भेदभाव को समाप्त करने के लिए कर्मठ जनों का आह्वान करते हैं तथा इस नये युग को नया मोड़ देने के लिए प्रेरित करते हैं। उन्होंने 'निराकरण' कविता में समता और एकता के सूत्र में सबको जोड़ने का संदेश दिया है। यथा-

विषमता हर क्षेत्र में जो आज है।

द्वेष दूषित यों सकल समाज है॥

भेद भाषा क्षेत्र का बढ़ने लगा।

हो रहा खंडित अखंडित ताज है॥

सूत्र समता एकता को जोड़ दो।

इस नये युग को नया अब मोड़ दो॥(3)

एक महान कवि किसी एक समुदाय, किसी एक वर्ग अथवा किसी एक धर्म के कल्याण की बात नहीं करता है, बल्कि एक महान कवि हर एक मनुष्य के कल्याण की कामना करता है। महाकवि सुधाकर जी से किसी मनुष्य की निर्धनता देखी नहीं जाती है। उन्होंने अपनी कविता 'लोकराज' में अवारापन के प्रति क्षोभ प्रकट किया है। उनकी अभिलाषा है कि सभी नर-नारी परिश्रम करें। महाकवि सुधाकर जी सामाजिक न्याय के पक्षधर हैं। उदाहरणार्थ-

मेहनतकश हों सब नर-नारी, कोई न यहाँ आवारा हो।

न्यायालय न्याय करे सच्चा, अन्याय न कभी गवारा हो,

मिट जाए गरीबी की रेखा, धन-धरती का बँटवारा हो॥(4)

आंबेडकरवादी चिंतन की सीमा केवल बौद्ध धम्म और सामाजिक क्रांति तक ही नहीं है, बल्कि राष्ट्रहित और राष्ट्ररक्षा का भाव भी आंबेडकरवादी चेतना की प्रमुख विशेषता है। आंबेडकरवादी चेतना की यह विशेषता महाकवि सुधाकर जी की कविता में स्पष्ट दिखाई देती है। 'हमारी एकता' कविता की निम्न पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं-

मातृभूमि की रक्षा करना पहला धर्म हमारा।

'जीओ और जीने दो' सम्यक यही हमारा नारा ॥(5)

धर्म के प्रति सुधाकर जी की धारणा बिल्कुल स्पष्ट है। उन्होंने धर्म की मूल अवधारणा को ध्यान में रखते हुए अपनी कविता 'दीपशिखा' में सद्धर्म को परिभाषित किया है। महाकवि सुधाकर जी की दृष्टि में सद्धर्म वही है, जो जन-जन का कल्याण करे। सुधाकर जी के शब्दों में-

धर्म वह हो नहीं सकता, जो बोये बीज नफरत के,

करे कल्याण जन-जन का, उसे सद्धर्म कहते हैं।(6)

धर्म जोड़ने का कार्य करता है, तोड़ने का नहीं। लेकिन जो धर्म के धंधेबाज लोग हैं, वे धर्म के नाम पर लोगों को बाँटते हैं, समाज को तोड़ते हैं। महाकवि सुधाकर जी ऐसे धर्म के धंधेबाजों की कड़ी आलोचना करते हैं। उनका मानना है कि धर्म के धंधेबाजों ने देश की दुर्गति की है। अपनी कविता 'धर्म के धंधेबाज' में वे स्पष्ट शब्दों में कहते हैं-

राजनीति से धर्म को जोड़ा, धर्म के धंधेबाजों ने,

गंगाजल में गरल निचोड़ाा, धर्म के धंधेबाजों ने।

निर्मल दर्पण सा दिल तोड़ा, धर्म के धंधेबाजों

ने,

नहीं कहीं का देश को छोड़ा, धर्म के धंधेबाजों ने ॥(7)

बाबा साहेब डॉ. आंबेडकर का यह मानना था कि जुल्म करने वाले से बड़ा गुनहगार जुल्म सहने वाला होता है। महाकवि सुधाकर जी का भी यही मानना है। 'शोषित' नामक कविता में वे शोषितों की दुर्दशा के लिए स्वयं शोषितों को ही जिम्मेदार मानते हैं। सुधाकर जी कहते हैं कि शोषित लोग स्वयं शोषकों के जाल में फँसे हुये हैं। यथा-

जहाँ तक सवाल है शोषितों के हाल का,

फँसे हुए सदियों से शोषकों के जाल में।

निगल न पाएँ पर छोड़ भी तो रहे नहीं,

पिसे जा रहे हैं क्रूर काल ही के गाल में ॥(8)

राजनेताओं तथा राजनैतिक मानसिकता वालों ने आरक्षण के विषय में इतना भ्रम फैला रखा है कि सामान्य लोग आरक्षण को दान अथवा अहसान समझते हैं। लोगों का यह भ्रम दूर करने के लिए महाकवि सुधाकर जी आरक्षण के सही तात्पर्य का स्पष्टीकरण करते हैं। वे बताते हैं कि आरक्षण कोई दान नहीं है, बल्कि अधिकार है और यह बाबा साहेब के संघर्ष का परिणाम है। सुधाकर जी कहते हैं कि आरक्षण वास्तव में वंचितों के संरक्षण हेतु रक्षा-कवच की तरह है। कवि सुधाकर जी के द्वारा रचित यह कुंडलिया छंद द्रष्टव्य है-

आरक्षण अधिकार है, नहीं दान अहसान।

दिलवाया है भीम ने, कर संघर्ष महान ॥

कर संघर्ष महान, हमें अधिकार दिलाया।

स्वाभिमान सम्मान से जीना हमें सिखाया॥

कहें सुधाकर सुनो, शोषितों का संरक्षण।

भीम कृपा से मिला, वंचितों को आरक्षण॥

(9)

बाबा साहेब डॉ. आंबेडकर का मिशन न तो केवल धम्म दीक्षा है, न ही केवल राजनैतिक सत्ता है, न तो केवल शिक्षा है, न ही केवल समाज सेवा है। केवल साहित्य-सृजन भी आंबेडकर-मिशन नहीं है। बाबा साहेब का मिशन संपूर्णता में है। अर्थात् इन सभी क्षेत्रों में सामन रूप से आंबेडकरवाद का आधिपत्य होना चाहिए। बाबा साहेब ने अगर शिक्षित बनने, संगठित होने और संघर्ष करने के लिए कहा, तो इस पर भी विचार करने की आवश्यकता है। शिक्षित किसलिए होना है? संगठित क्यों होना है और संघर्ष किसके लिए करना है? इन्हीं बातों की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित करते हुए कवि एल.एन. सुधाकर जी ने अपनी कविता 'क्या मिशन इसी को कहते हैं?' में मिशनरी लोगों से बहुत ही महत्वपूर्ण प्रश्न किया है। यथा-

बाबा ने कहा, शिक्षित होकर संगठित बनो, संघर्ष करो।

दलितों अपना लो बौद्ध धम्म, उठ जागो, तुम उत्कर्ष करो॥

न बौद्ध बने, न एक हुए, संघर्ष तो करना दूर रहा।

आंबेडकरवादी सोचो तो, क्या मिशन इसी को कहते हैं?(10)

स्पष्ट है कि कवि एल.एन. सुधाकर जी के काव्य में आंबेडकरवादी चिंतन का स्वरूप बिल्कुल शुद्ध और स्पष्ट है। उनकी काव्य-दृष्टि आंबेडकरवाद के मूल सिद्धांतों पर आधारित है। उनके काव्य का प्रयोजन आंबेडकरवाद को सम्यक रूप में प्रचारित-प्रसारित करना है। उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से समाज और राष्ट्र के उत्थान के लिए जनमानस को प्रेरित किया है। कवि सुधाकर जी समस्त मनुष्यों के

कल्याण हेतु आंबेडकरवाद को महत्वपूर्ण मानते हैं। उनकी दृष्टि में आंबेडकरवाद के अंतर्गत बुद्धवाद, बहुजनवाद, समतावाद, आदर्शवाद, यथार्थवाद आदि सभी वादों का समावेश है। कवि सवुधाकर जी के साहित्य का सम्यक विश्लेषण करने के उपरांत यह स्पष्ट हो जाता है कि उनका काव्य-चिंतन आंबेडकरवाद की परिधि से बाहर तनिक भी नहीं है।

संदर्भ :-

(1) उत्पीड़न की यात्रा- एल.एन. सुधाकर, पृष्ट 16, सम्यक प्रकाशन नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2022

(2) वही, पृष्ठ 20

(3) वही, पृष्ठ 37

(4) वही, पृष्ठ 39

(5) वही, पृष्ठ 41

(6) वही, पृष्ठ 53

(7) वही, पृष्ठ 56

(8) वही, पृष्ठ 61

(9) प्रबुद्ध भारती- एल.एन. सुधाकर, पृष्ठ 43, रतन प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2008

(10) वही, पृष्ठ 56

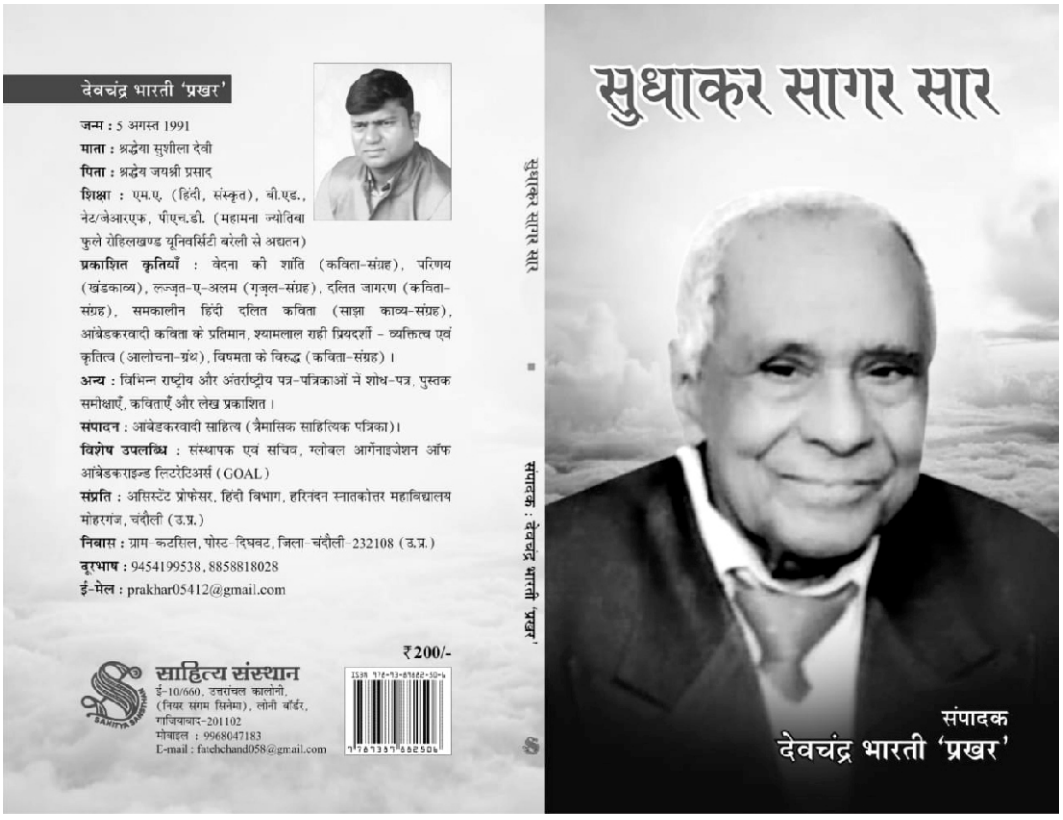

संस्मरण

देवचंद्र भारती 'प्रखर'
चन्दौली, उत्तर प्रदेश
मो. 9454199538

एक महाकवि : दो मुलाकातें

मनुष्य अपने जीवन काल में बहुत से व्यक्तियों से मिलता है, किंतु वह कुछ ही व्यक्तियों के व्यक्तित्व से प्रभावित होता है। एक कवि के रूप में मेरी पहचान दसवीं कक्षा में पढ़ते समय ही बन गयी थी। तब से लेकर अब तक न जाने कितने कवियों से मैं मिल चुका हूँ। किंतु कुछ ही कवियों को मैंने हृदय से कवि माना है। मेरा मानना है कि केवल काव्य-रचना करने मात्र से कोई कवि नहीं हो जाता है। एक कवि को काव्यशास्त्र का ज्ञान अवश्य होना चाहिए। साथ ही उसमें दार्शनिक दृष्टि का होना भी आवश्यक है। हिन्दी के आंबेडकरवादी कवियों में महाकवि एल.एन. सुधाकर जी के व्यक्तित्व से मैं सर्वाधिक प्रभावित हुआ हूँ।

एल.एन सुधाकर जी आंबेडकर मिशन के प्रति कर्तव्यनिष्ठ, कर्मठ एवं संघर्षशील मिशनरी कवि हैं। वंचित वर्ग के प्रतिभाशाली युवा साहित्यकारों के प्रति अपने उत्तरदायित्व का भली-भाँति निर्वहन करते हुए उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करते रहते हैं। उनकी इसी चारित्रिक विशेषता ने मुझे उनके प्रति आकृष्ट किया। सुधाकर जी से मेरा परिचय फेसबुक के माध्यम से हुआ था। मेरी आंबेडकरवादी विचारधारा से प्रभावित होकर उन्होंने वर्ष 2020 से लेकर अब तक निरंतर मेरी प्रशंसा की है और मुझे मंगलकामना दी है। मैं उनके उत्कृष्ट कृतित्व और व्यक्तित्व से इतना प्रभावित हुआ कि उनसे मिलने की इच्छा मेरे मन में उत्पन्न हुई।

4 अप्रैल 2022, दिन सोमवार को महाकवि सुधाकर जी से शिष्टाचार मुलाकात करने के लिए मैं

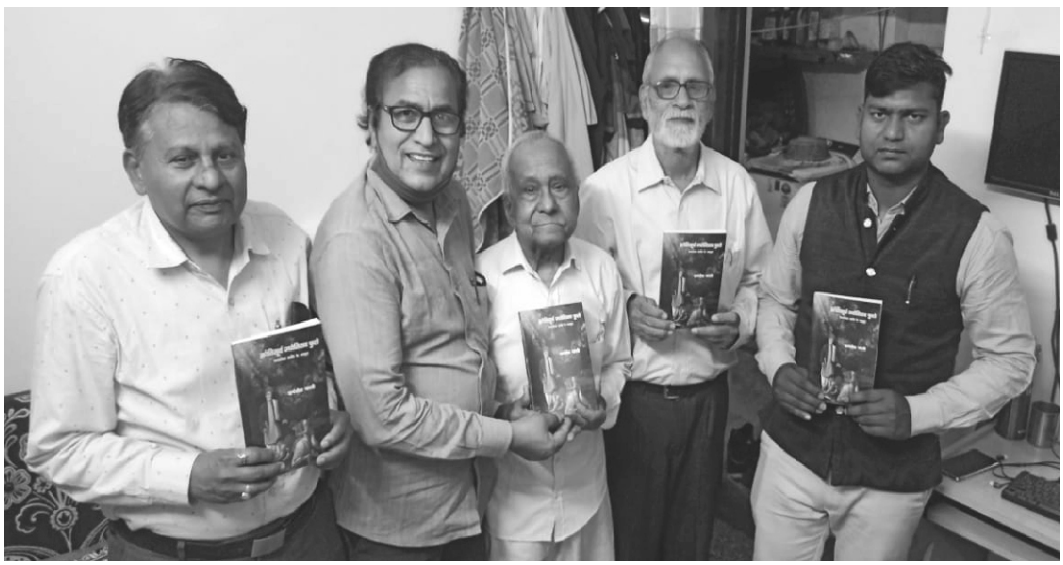

और गोल के अध्यक्ष डॉ. राम मनोहर राव जी उनके घर पहुँचे। वहाँ वरिष्ठ आंबेडकरवादी साहित्यकार रघुवीर सिंह नाहर जी (अलवर, राजस्थान) और कर्मशील भारती जी (दिल्ली) भी उपस्थित थे। सभी साहित्यकारों ने एक दूसरे का कुशल क्षेम पूछा। उसके बाद जलपान किया गया। जलपान के बाद उपस्थित हम सभी साहित्यकारों ने महाकवि सुधाकर जी से उनकी कुछ काव्य रचनाएँ सुनने का आग्रह किया। सुधाकर जी ने स्वरचित कविता 'लाल किला' का सस्वर वाचन किया। उनकी काव्यपाठ करने की शैली हम सभी साहित्यकारों के मन को मोह ली। हम सबकी काव्य श्रवण भूख शांत होने का नाम ही नहीं ले रही थी। हम सबने सुधाकर जी से कई कविताएँ सुनी और आनंदित हुये।

भोजन करने के उपरांत सभी साहित्यकारों ने एक-दूसरे को अपनी-अपनी पुस्तकें प्रदान की। उन पुस्तकों में रघुवीर सिंह नाहर जी की काव्य पुस्तकें थीं- 'पत्थर भी मुखड़ा खोलेंगे' और 'नाहर सतसई' डॉ. राम मनोहर राव जी की काव्य पुस्तकें थीं- 'तीसरी आजादी की जंग' और 'आंबेडकरवादी चेतना की गजलें'। कर्मशील भारती जी का नाटक संग्रह था- 'क्रांतिज्योति महामना ज्योतिबा फुले'। सुधाकर जी ने अपनी काव्य पुस्तकें 'बुद्ध सागर', 'भीम सागर', 'उत्पीड़न की यात्रा', 'प्रबुद्ध भारती', 'वामन फिर आ रहा है' आदि हम सभी साहित्यकारों को भेंट की। उस अवसर पर आंबेडकरवादी सात्यिकारों के वैश्विक संगठन (गोल) की ओर से माननीय एल.एन. सुधाकर जी को स्मृति चिन्ह प्रदान करके सम्मानित किया गया। उस अवसर पर उपस्थित साहित्य संस्थान गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश के प्रकाशक आशीष सिंह जी ने उस दिन की स्मृति को कैमरे में कैद किया था। महाकवि सुधाकर जी से शिष्टाचार मुलाकात करके घर लौटने के बाद दूसरे दिन अचानक मेरे मन में यह विचार आया कि क्यों न

मैं सुधाकर जी की रचनाओं का संपादन करुँ? यह विचार मेरे हृदय को उद्वेलित किया और मैंने सुधाकर जी की दोनों महाकाव्य-कृतियों 'बुद्ध सागर' और 'भीम सागर' को आधार बनाकर 'सुधाकर सागर सार' नाम से पुस्तक का संपादन करने का निश्चय कर लिया। मात्र दो महीनों के अंदर ही 'सुधाकर सागर सार' नामक पुस्तक प्रकाशित होकर पाठकों के लिए उपलब्ध हो गयी।

महाकवि सुधाकर जी से मेरी दूसरी मुलाकात 30 अप्रैल 2023 को हुई। उस दिन मैं अपने एक शोधार्थी साथी वीरपाल सिंह को साथ लेकर सुधाकर जी का साक्षात्कार लेने उनके घर गया था। सुधाकर जी से मैंने कुल बारह प्रश्न पूछे थे, जिनका उत्तर उन्होंने बहुत ही शालीनता और गंभीरता के साथ दिया था। पारिवारिक वार्तालाप के दौरान सुधाकर जी ने बाताया कि उनके पोते ने एक ब्राह्मण कन्या से विवाह किया है। अंतर्जातीय विवाह को उन्होंने सहर्ष स्वीकृति दी थी। महाकवि सुधाकर जी शुद्ध रूप से बौद्ध धम्म के अनुयायी हैं। उनके परिवार में सभी शादियाँ बौद्ध रीति से सम्पन्न हुई हैं। बौद्ध धम्म और आंबेडकर मिशन के प्रति उनका सम्पूर्ण जीवन समर्पित रहा है। अपने जीवन की अंतिम अवस्था में भी वे तथागत बुद्ध और बाबा साहेब डॉ. भीमराव आंबेडकर के दार्शनिक विचारों का प्रचार-प्रसार करने हेतु मानसिक रूप से सदैव सक्रिय रहते हैं।

साक्षात्कार

देवचंद्र भारती 'प्रखर' के प्रश्न और महाकवि एल.एन. सुधाकर के उत्तर

'आंबेडकरवादी साहित्य' पत्रिका के संपादक देवचंद्र भारती 'प्रखर' ने दिनांक 30.04.2023 को महाकवि एल.एन. सुधाकर का साक्षात्कार लिया था। साक्षात्कार के दौरान उन्होंने महाकवि सुधाकर जी से कुल बारह प्रश्न पूछे थे। सुधाकर जी ने उन बारह प्रश्नों के उत्तर बड़ी गम्भीरता से और विस्तारपूर्वक दिये थे। दोनों साहित्यकारों के बीच हुये वार्तालाप तथा प्रश्नोत्तर यहाँ प्रस्तुत हैं।

1.आपने साहित्य सृजन करना कब और किस परिस्थिति में आरंभ किया था?

उत्तर- हरिजन सेवक संघ के तत्वावधान में संचालित हरिजन उद्योगशाला (आईटीआई) किंग-वे कैंप में 2 वर्षों तक टेलरिंग (दर्जी) का काम सीखते समय एक दिन उद्योग और एक दिन पढ़ाई का कार्य करता था। खाली समय में हरिजन सेवक संघ के पुस्तकालय में साहित्यिक पुस्तकों का अध्ययन करता था। सन् 1953 में शरदचंद्र (कपाल कुंडला) बंकिमचन्द्र (आनंद मठ) सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा, मैथिलीशरण गुप्त, रामधारी सिंह 'दिनकर' की रचनाएँ पढ़कर साहित्य में रुचि उत्पन्न हुई। उसी वर्ष पुस्तकालय में बाबा साहेब की पुस्तक 'अछूत कौन और कैसे?' (अनुवादक- भदंत आनंद कौशल्यायन) तथा 'शूद्रों की खोज' पढ़ा था। कविता बनाने से नहीं बनती है, कविता अंदर से फूटती है। सन् 1955 में 17 वर्ष की आयु में मैंने पहली कविता लिखा था। कविता की कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं-

कोई तो बता दे तनिक मुझे,
क्या दुःख हमारे कम होंगे?
दुःख सहे अनेकों बचपन में,
अब भी दुःख ही दुःख देख रहा।

2.आपने साहित्य-सृजन के लिए आंबेडकरवादी आंदोलन का ही क्षेत्र क्यों चुना?

उत्तर- सन् 1955 में दिल्ली के आंबेडकर भवन में मैने बाबा साहेब को पहली बार देखा था। बाबा साहेब ठीक वैसे ही थे, जैसी मूर्ति संसद भवन में लगी हुई है। सन् 1957 में बाबा साहेब के घनिष्ठ सोहन लाल शास्त्री और शंकरानंद शास्त्री (संस्कृत के विद्वान) दोनो लोग मेरे बहनोई के घर के पास रहते थे। दिल्ली में आंबेडकरवादी आंदोलन का आरंभ इन दोनों शास्त्रियों की बदौलत हुआ। वे लोग हर रविवार को आंबेडकरवादी विचारधारा का सत्संग करते थे। सोहन लाल शास्त्री और अन्य लोगों का भाषण सुनकर मैंने दूसरे हफ्ते (रविवार को) सत्संग में पहली मिशन कविता सुनाई थी। वह कविता इस प्रकार है-

बाबा तेरा बलिदान विश्व में नव परिवर्तन ला देगा।
बन करके सुकरात पिया तुमने भी गरल का प्याला है,
सदियों के शोषित मानव को कीचड़ से आज निकाला है,

साक्षात्कार के दौरान (बायें से) देवचन्द्र भारती, एल.एन. सुधाकर जी एवं वीरपाल सिंह

भारत के मानसरोवर में समता का कमल खिला देगा,
बाबा तेरा बलिदान विश्व में नव परिवर्तन ला देगा।।

उसके बाद मैं हर रविवार को उस आंबेडकरवादी सत्संग में जाने लगा। तभी से मैं आंबेडकरवादी आंदोलन से जुड़ा हुआ हूँ।

3. आंबेडकरवादी विचारधारा से पहले आप किस विचारधारा से जुड़े हुये थे?

उत्तर- पहले मैं बौद्ध नहीं था। हिन्दू ही था। हिन्दू जैसा कार्य और व्यवहार करता था। लेकिन मैं कबीरपंथी था। मेरी दादी को कबीर के पचासों अमृतवाणी याद थे। मेरे परिवार के लोग जाहर वीर (पीर बाबा) को मानते थे, जिन्हें गोगा या गुग्गा वीर भी कहा जाता है। जाहर वीर वास्तव में एक नागवंशी राजा थे।

4. आप मार्क्सवाद और आंबेडकरवाद में किसे तथा क्यों बेहतर मानते हैं?

उत्तर- मैं आंबेडकरवाद को बेहतर मानता हूँ। मार्क्सवाद हिंसा में विश्वास करता है। इसलिए बाबा साहेब उसे पसंद नहीं करते थे। भारतीय मार्क्सवाद तथाकथित सवर्णों के हाथ में था और उन्होंने जातिवाद के विरुद्ध कभी लड़ाई नहीं लड़ी। भारतीय मार्क्सवादी ढोंगी हैं। अतः भारतीय परिप्रेक्ष्य में मार्क्सवाद से बेहतर आंबेडकरवाद है। मार्क्सवाद और हिन्दूवाद में कोई अन्तर नजर नहीं आता।

5. सामान्यतः आंबेडकरवाद को लोग जाति और वर्ग तक सीमित समझते हैं। आपके विचार में क्या यह उचित है?

उत्तर- नहीं यह बिल्कुल अनुचित है। लोग बाबा साहेब के बारे में अनभिज्ञता के कारण इस तरह का आरोप लगाते हैं। आंबेडकरवाद जाति और वर्ग तक सीमित नहीं है।

6. क्या आप किसी साहित्यिक संगठन अथवा संस्था से जुड़े थे? यदि हाँ, तो आपने किस प्रकार का अनुभव किया?

उत्तर- हाँ, मैं 'भारतीय दलित साहित्य मंच' (1984) से जुड़ा था। इस मंच के ज्यादातर सदस्य आंबेडकरवादी विचारधारा के थे। वे आंबेडकरवाद के प्रचारक थे। इसका नाम भले ही 'दलित साहित्य मंच' था, लेकिन संस्था बाबा साहेब के विचारों का प्रचार करने के लिए बनी थी। 'भारतीय दलित साहित्य मंच' का मैं 18 वर्ष (2002) तक अध्यक्ष रहा। मैंने स्वयं इसे छोड़ दिया। वर्ष 2002 में बौद्ध भिक्षु बन गया। संघाराम बुद्ध विहार, लोनी रोड शाहदरा, नई दिल्ली में 13 अक्टूबर 2002 से 13 नवम्बर 2002 तक एक महीने बौद्ध भिक्षु बना रहा। मैं 'भारतीय दलित साहित्य अकादमी' दिल्ली का अभी तक सदस्य हूँ। इस अकादमी ने सभी विचारधारा के एससी-एसटी के लोगों को एक मंच पर लाने का काम किया और सफल रही। लेकिन उनका ध्येय आय का साधन था। इस अकादमी में फेलोशिप दिया जाता था। रुपया 100 लेकर लोगों को सम्मान (फेलोशिप बैज) दिया जाता था। 'भारतीय दलित साहित्य अकादमी' के अध्यक्ष सोहन लाल सुमनाक्षर जी कांग्रेस के नेता थे। उनकी आलोचना हुई, लेकिन उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ा। बाबू जगजीवन राम ने 'भारतीय दलित साहित्य अकादमी' की स्थापना की थी। सुमनाक्षर जी बाबा साहेब से ज्यादा जगजीवन राम से प्रभावित थे।

7. आपने 'बुद्ध सागर' और 'भीम सागर' नामक दो महाकाव्यों का सृजन किया है। आपको यह प्रेरणा कहाँ से प्राप्त हुई?

साक्षात्कार के दौरान (बायें से) वीरपाल सिंह, एल.एन. सुधाकर जी एवं देवचन्द्र भारती

उत्तर- खेमचंद्र सुमन, विष्णु प्रभाकर आदि साहित्यकारों तथा डॉ. धर्मवीर, डॉ. नारायणदत्त पालीवाल (हिन्दी अकादमी के सचिव) से प्रेरित होकर मैंने 'भीम सागर' की रचना की। 'भीम सागर' का प्रचार-प्रसार 'हरित साहित्य मंडल' के सभी साहित्यकारों ने किया। विशेष रूप से बिहारी लाल हरित और पालीवाल जी ने मुझे प्रोत्साहित किया। 'भीम सागर' की सफलता से प्रेरित और प्रोत्साहित होकर मैंने 'बुद्ध सागर' की रचना की। 'बुद्ध सागर' की रचना में लगभग दो वर्षों का समय लगा था।

8. वर्तमान में 'दलित लेखक संघ' नाम से दो साहित्यक संगठन सक्रिय हैं। साथ ही 'नव दलित लेखक संघ' भी अस्तित्व में है। इस बारे में आपका क्या विचार है?

उत्तर- आरंभ में 'दलित लेखक संघ' (दलेस) बड़े-बड़े सम्मेलन किया। राजेन्द्र यादव का इसमें विशेष सहयोग रहा। संस्थापक सदस्यों ने दलेस को छोड़ दिया। वर्तमान में दलेस के नाम से क्या हो रहा है? मुझे विशेष जानकारी नहीं है। ये लोग गद्दी के भूखे हैं। ये कुर्सी के भूखे लोग हैं। सभी को पद प्रतिष्ठा की चाह है। इसी लालच में ये लोग नये-नये संगठन बना लिये हैं। ये लोग काम नहीं करते हैं।

9. वर्ष 2021 से 'गोल' नामक साहित्यक संगठन अस्तित्व में आया है। इस संगठन के उद्देश्य और कार्यों को आप किस दृष्टि से देखते हैं?

उत्तर- गोल के उद्देश्य और कार्य सराहनीय हैं। गोल के संस्थापक को मैं हृदय से प्रेम और आशीर्वाद देता हूँ।

10. आंबेडकरवादी चिंतन और साहित्य से संबंधित अनेक पत्रिकाएँ प्रकाशित होती हैं। अब तक आप कितनी पत्रिकाओं से प्रभावित हुये हैं और क्यों?

उत्तर- मैं अब तक जिन पत्रिकाओं से प्रभावित हुआ हूँ, उनके नाम इस प्रकार है- प्रज्ञा विजय (संपादक- भंते प्रज्ञानंद), धम्म दर्पण (भारतीय बौद्ध महासभा द्वारा प्रकाशित), दलित साहित्य वार्षिकी, दलित टुडे (संपादक- महीपाल सिंह), अंगुत्तर (संपादक- विमल कीर्ति), अस्मितादर्श (संपादक- डॉ. तारा परमार, डॉ. पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी), हिमायती (संपादक- डॉ. सोहन पाल सुमनाक्षर), युद्धरत आम आदमी (संपादक- रमणिका गुप्ता), जमीं के तारे (संपादक- प्रेम प्रदीप)। 'जमीं के तारे' पत्रिका में मेरी यह कविता छपी थी-

जगमग ज्योति जगा दे जग में
जाग जमीं के तारे।
मंजिल पर जब तक ना पहुँचे,
कभी न हिम्मत हारे।।

मैं इन सभी पत्रिकाओं से इसलिए प्रभावित हुआ, क्योंकि ये सभी पत्रिकाएँ शोषित वर्ग की आवाज उठाती रही हैं।

11. क्या दलित स्त्रीवाद, आंबेडकरवाद अथवा स्त्री-पुरुष समानता के लिए महत्वपूर्ण है? यदि हाँ, तो क्यों? और नहीं, तो क्यों नहीं?

उत्तर- नहीं, आंबेडकरवाद में दलित स्त्रीवाद के लिए कोई स्थान नहीं है। क्योंकि आंबेडकरवाद स्त्री-पुरुष में कोई भेद नहीं करता है।

12. पुरुषों का कोई सामाजिक/साहित्यिक संगठन नहीं है। जबकि महिलाओं के अनेक सामाजिक/साहित्यिक संगठन हैं। क्या यह समतावाद के पक्ष में है?

उत्तर- नहीं, बिल्कुल नहीं। क्योंकि स्त्री और पुरुष एक-दूसरे के पूरक हैं। अलग-अलग मंच/संगठन होने से दूरियाँ बढ़ती हैं।

प्रशस्ति काव्य

रघुबीर सिंह 'नाहर'
अलवर, राजस्थान

आदरणीय सुधाकर जी पर कुंडलियाँ

अपना लिया बौद्ध धर्म, रहे नशे से दूर।
खिलखिलाकर हंस रहे, बढ़ता जाए नूर।।
बढ़ता जाए नूर, प्यार की सरिता बहती।
पोते हुए जवान, लाड़ से दादी कहती।।
कह नाहर कविराय, एक दिन आया सपना।
गए सुधाकर पास, कहें हम जिनको अपना।।

देखा ओरा आपका, मिला शील का ज्ञान।
धन्य धन्य सुधाकर जी, आप बड़े बलवान।।
आप बड़े बलवान, कष्ट में करी पढ़ाई।
मिला असीम प्रकाश, कौम को राह दिखाई।।
कह नाहर कविराय, धम्म की डाली रेखा।
रहते सदा प्रसन्न, मिले तब हमने देखा।।

माली तेरे बाग में, भांति भांति के फूल।
रखवाली करते रहें, लगती कभी न धूल।।
लगती कभी न धूल, सदा खिलते ही रहते।
मृदुता उनके पास, प्यार के झरने बहते।।
कह नाहर कविराय, चमन में छाई लाली।
धन्य हुआ परिवार, मिला है कर्मठ माली।।

राजा को माना नहीं, कभी काव्य आधार।
भीमसागर सृजन किया, बने गले का हार।।
बने गले का हार, प्यार पाया है जग में।
अपनी धुन के मस्त, चमकते रहते नभ में।।
कह नाहर कविराय, बजाओ मिलकर बाजा।
नाचें गाएं साथ, सुधाकर मन के राजा।।

चंदा लेकर आ गये, तारों की बारात।
घर-आंगन रौशन हुआ, होती रहती बात।।
होती रहती बात, धम्म का पाठ पढ़ाया।
मिलता आशीर्वाद, मिशन को खूब बढ़ाया।।
कह नाहर कविराय, धरा पर आई नंदा।।
कितनी शीतल रात, चमकते रहते चंदा।।

आए थे सुधाकर जी, अठलकड़ा है नाम।।
मई माह अड़तीस को, मैनपुरी के ग्राम।।
मैनपुरी के ग्राम, मिती पन्द्रह बताई।।
मात-पिता हो धन्य, करी थी कठिन कमाई।।
कह नाहर कविराय, गीत जीवन भर गाए।
धन्य धन्य हैं आप, सुधाकर घर में आए।।

हमने आकर पा लियाा, जिंदा एक विचार।
पथ बाबा के चल रहे, पूरा ही परिवार।।
पूरा ही परिवार, बोल जय भीम पुकारें।
कभी ना बोलें राम, श्याम को सभी नकारें।।
कह नाहर कविराय, लगा है मेला जमने।
सुर में गाए गीत, बधाई दी थी हमने।।

योद्धा धम्म विचार के, मिलनसार इन्सान।
लदे फलों के पेड़ हैं, किया यहां रसपान।।
किया यहां रसपान, धमनियां बोल रही हैं।
मिला ज्ञान भंडार, उलझनें खोल रही हैं।।
कह नाहर कविराय, ज्ञान का देना पौधा।
होंगे भावविभोर, बनेंगे हम भी योद्धा।।

पाया दमित समाज ने, हीरा है अनमोल।
मिश्री सी घुलती रहे, मीठे जिसके बोल।।
मीठे जिसके बोल, ज्ञान की बिखरे आभा।
चमक रहे हैं आज, धरा पर होमी भाभा।।
कह नाहर कविराय, समय आदर का आया।
देते हैं सम्मान, हीरा अमोलक पाया।।

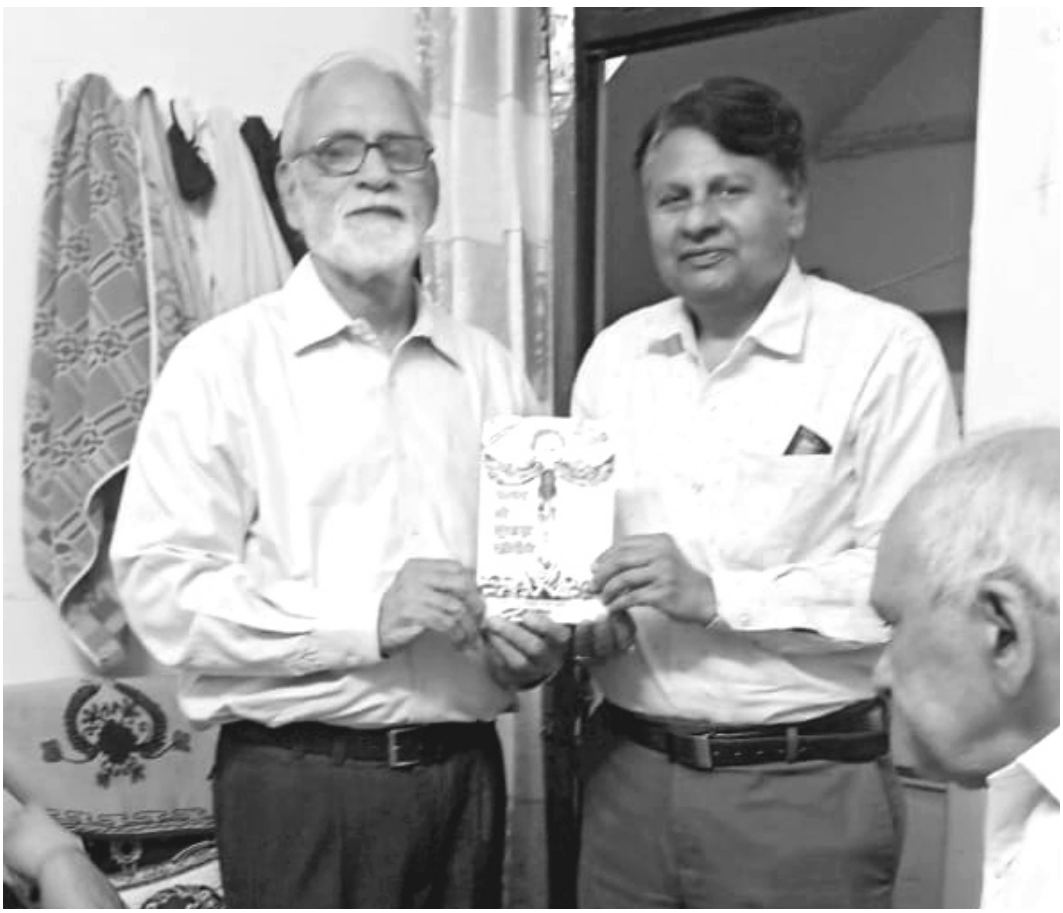

कवि परिचय

महाकवि एल.एन. सुधाकर का संक्षिप्त परिचय

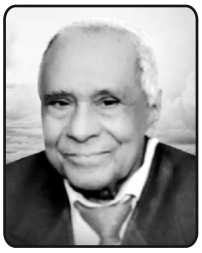

महाकवि एल.एन. सुधाकर जी आंबेडकरवादी साहित्कारों के वैश्विवक संगठन 'गोल' के सलाहकार हैं। ये एक वरिष्ठ आंबेडकरवादी साहित्यकार एवं चिंतक हैं तथा आंबेडकरवादी साहित्यकारों के लिए आदर्श भी हैं। महाकवि एल.एन. सुधाकर जी का संक्षिप्त परिचय यहाँ प्रस्तुत है।

एल.एन. सुधाकर

पूरा नाम : लक्ष्मी नारायण सुधाकर

जन्मः 15 मई 1938 को ग्राम अठलकड़ा, मैनपुरी, उत्तर प्रदेश

शिक्षाः प्रभाकर (हिन्दी ऑनर्स) पंजाब विश्वविद्यालय, बी.ए. (स्नातक) मेरठ विश्वविद्यालय

प्रकाशित रचनाएँः बुद्ध और बोधिसत्व आंबेडकर (संपादित), भीम सागर, बुद्ध सागर (महाकाव्य), उत्पीड़न की यात्रा, प्रबुद्ध भारती, वामन फिर आ रहा है (कविता संग्रह)।

पुरस्कार एवं सम्मान : दिल्ली दूरदर्शन, हिन्दी अकादमी, दिल्ली द्वारा आयोजित कवि सम्मेलनों में आमंत्रित कवि के रूप में अनेक बार काव्य-पाठ। अनेक सामाजिक एवं साहित्यिक संस्थाओं द्वारा समय-समय पर सम्मानित। डॉ. आंबेडकर कल्चरल एण्ड एजुकेशनल सोसायटी आगरा, उत्तर प्रदेश द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित निबंध प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त। साहित्य सेवाओं के लिए भारतीय दलित साहित्य अकादमी द्वारा डॉ. आंबेडकर नेशनल अवार्ड (1999)। 'बुद्ध सागर' के लिए भारतीय दलित साहित्य अकादमी भोपाल, मध्यप्रदेश द्वारा 'संत कबीर काव्य रत्न सम्मान' (2004)। समता सैनिक दल द्वारा विशेषज्ञ साहित्य सम्मान (2007)।

संप्रति : उद्योग मंत्रालय (भारत सरकार) से मई 1996 में अनुसंधान अधिकारी (प्रथम श्रेणी) के पद से सेवानिवृत्त, पूर्व अध्यक्ष भारतीय दलित साहित्य मंच (रजिस्टर्ड) दिल्ली।

संपर्क : एक्स ब्लॉक, मकान नं. 69/3, गली नं. 5-6, ब्रह्मपुरी (न्यू उस्मानपुर), दिल्ली-110053

मोबाइल : 9868471218

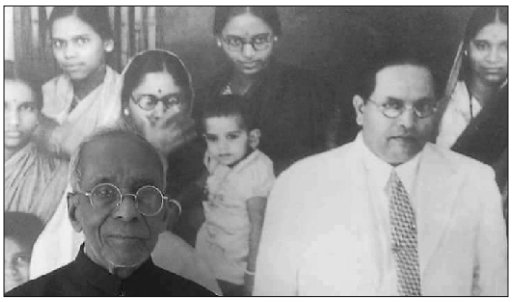

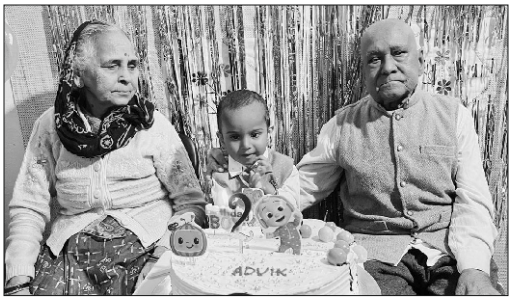
ADVIK

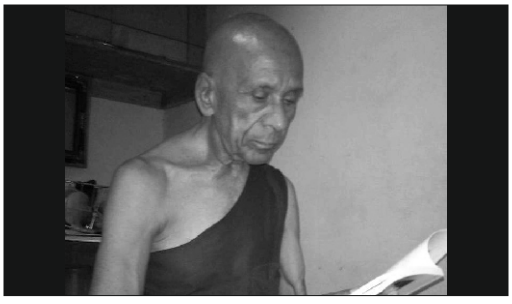

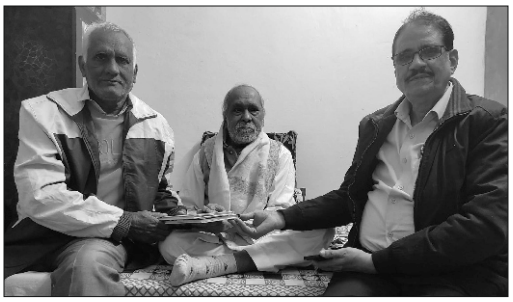

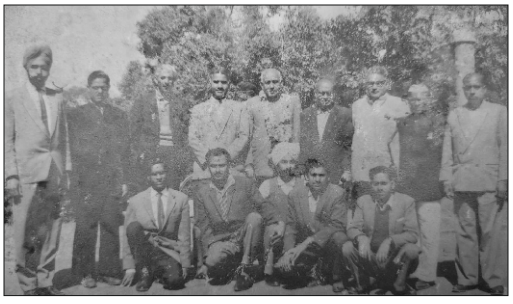

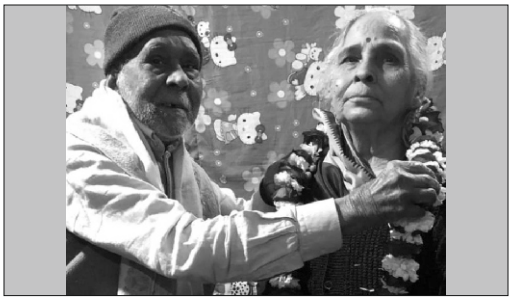

स्थापना तिथि - 6 दिसम्बर 2021

आंबेडकरवादी साहित्यकारों का वैश्विक संगठन

ग्लोबल ऑर्गेनाइजेशन ऑफ आंबेडकराइज्ड लिटरेटिअर्स

Global Organization of Ambedkarised Litterateurs
GOAL
आंबेडकरवादी साहित्यकारों का वैश्विक संगठन

सम्मान-पत्र

मा. एल. एन. सुधाकर

को
हिंदी आंबेडकरवादी साहित्य की उन्नति में
मूल्यवान सेवाओं के लिए संगठन द्वारा आयोजित
प्रथम सेमिनार (यू.पी. प्रेस क्लब, लखनऊ) में

आंबेडकरवादी साहित्य सम्मान

से विभूषित किया जाता है
और प्रमाण स्वरूप यह सम्मान-पत्र
आज दिनांक 29 मई 2022 को सहर्ष प्रदान किया जाता है ।

देवचंद्र भारती 'प्रखर'
सचिव

डॉ0 राम मनोहर राव
अध्यक्ष

हिन्दी भवन, दिल्ली में महाकवि एल.एन. सुधाकर जी के सुपुत्र अरुण सुधाकर जी को 'आंबेडकरवादी साहित्य सम्मान' सुपुर्द करते हुए 'गोल' के पदाधिकारी एवं सदस्यगण।

'' आयुष्मान देवचंद्र भारती प्रखर, सच्चे देशभक्त मनीषी चिंतक कवि, साहित्यकार, समीक्षक, समालोचक 'आंबेडकरवादी साहित्य' पत्रिका के सम्पादक, गोल जैसी अंतर्राष्ट्रीय संगठन के महासचिव हैं। अनेक लोगों को अनेक अवसरों पर सम्मानित करने में अग्रणी भूमिका निभाने वाले रहे हैं। अपनी आयु से अधिक परिपक्व, गम्भीर और सुलझे हुए निष्ठावान, निर्भय, निर्मल, निष्पक्ष, न्यायप्रिय, स्वाभिमानी व्यक्तित्व के धनी हैं। उनका सम्मान प्रकट रूप से भले ही नजर नहीं आता है, परन्तु वास्तविकता यह है कि प्रत्येक मनीषी चिंतक विद्वान उनके इन सद्‌गुणों का कायल है। मेरी अपनी दृष्टि में डॉ. जयप्रकाश कर्दम जैसे कतिपय विद्वानों को छोड़कर 'प्रखर' जैसा होनहार सामाजिक चिंतन के क्षेत्र में बहुजन हिताय बहुजन सुखाय साहित्य का सृजन करने वाले विरले ही दृष्टिगोचर होते हैं। भवतु सब्ब मंगलं। जय भीम - नमो बुद्धाय।''

- महाकवि एल.एन. सुधाकर, दिल्ली

समस्त देशवासियों को आंबेडकर-जयंती एवं बुद्ध-पूर्णिमा की हार्दिक बधाई एवं मंगलकामनाएँ

डॉ. नविला सत्यादास
सेवानिवृत्त एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
राजकीय महीन्द्र कॉलेज, पटियाला, पंजाब

डॉ. रमेश कुमार
सेवानिवृत्त आयकर आयुक्त
अहमदाबाद, गुजरात

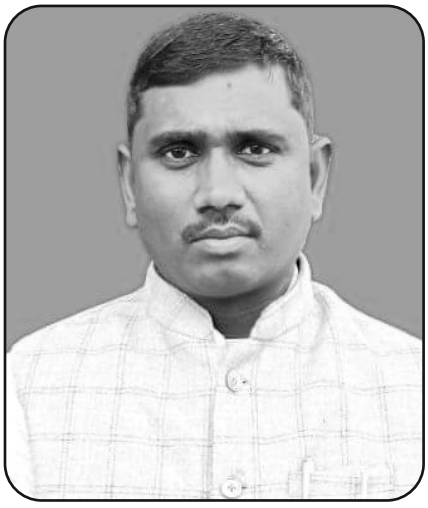

डॉ. बुद्धप्रिय सुरेश सौरभ 'गाजीपुरी'
सहायक अध्यापक एवं कोषाध्यक्ष GOAL
गाजीपुर, उत्तर प्रदेश

कैप्टन लाल बिहारी प्रसाद
एन.सी.सी. आफिसर/प्रवक्ता,
अमर शहीद विद्या मंदिर इं.कॉ., शहीदगाँव, चन्दौली, उ.प्र.

कविता

एल.एन. सुधाकर का काव्य-साहित्य

निजीकरण की आँधी

उपभोक्तावादी नीति को
बाजीरीकरण सुहाता है।
उन्मुक्तपूर्ण व्यापार नीति,
सरकारी तंत्र बनाता है।।
भूमण्डलीकरण अथवा,
यह विश्वीकरण अनोखा है।
निर्धन पिछड़ों दलितों के संग,
सतत् सरासर धोखा है।।

दलितों को पद-दलित
बनाने का षडयंत्र ही जारी है।
आरक्षण से वंचित करने
की पूरी अब तैयारी है।।
पढ़-लिखकर कुछ दलित
पा गये ऊँचे पद सरकारी है।
पूँजीपति-सामन्त सवर्णों
को खलते अति भारी है।।

साम-दाम और दण्ड-भेद की नीति,
यह चाल पुरानी है।
निजीकरण प्रत्यक्ष रूप से
भेद-नीति मनमानी है।।
धन-धरती पर सामन्त-सवर्णों
की ही ठेकेदारी है।
मिलों-कारखानों के मालिक
सबल-सवर्ण व्यापारी है।।

पुलिस से लेकर न्यायालय तक
उनका ही वर्चस्व यहाँ।
सरकारी या निजी उद्यमों
में उनका सर्वस्व यहाँ।।
ऊँच-नीच के भेद-भाव
का वातावरण अपूर्व घना।
दलितों-पिछड़ों को लाभ से
वंचित ऐसे ही अब है रखना।।

स्मृतियाँ-वेद-पुराण सभी
द्विजवर्ग हेतु हितकारी है।
किन्तु शूद्र-दलितों-पिछड़ों
के हेतु भयंकर भारी है।।
भारतीय संविधान के ये प्रतिकूल,
सत्य का सार नहीं।
स्वतंत्रता-समता एवं भ्रातृत्व
इन्हें स्वीकार नहीं।।

रोम-रोम इन धर्म शास्त्रों में ही
बँधा सवर्णों का।
इसीलिए तो बद से बदतर हाल है
यहाँ अवर्णों का।।
नई आर्थिक-नीति के अन्दर
निजीकरण अति गहरा है।
दलितों के अस्तित्व को खतरा,
कर्णधार यहाँ बहरा है।।

नई जो शिक्षा-नीति,
आर्थिक नई-नीति का ही फल है।
दलितों-पिछड़ों-अल्पसंख्यकों के
प्रतिकूल प्रबल छल है।।
नीजी क्षेत्र में शिक्षा इतनी
मँहगी जब हो जायेगी।
निर्धन जनता बच्चों को
तब पढ़ा-लिखा क्या पायेगी?

दलितों-पिछड़ों को शिक्षा से
ऐसे ही वंचित रखना है।
मनुवादी यह नीति पुरानी,
तुमको स्वयं परखना है।।
''शम्बूकों और एकलव्यों'' को,
भारत में न्याय दिलाने को।
मनुवाद का पर्दाफाश करो,
सामाजिक-समता पाने को।।

नीजीकरण की आँधी में,
सर्वस्व लुटा अब जाता है।
सदियों से वंचित के मुँह का
अब छिना कौर भी जाता है।।
'बाबा' का यह सन्देश सुनो,
सम्मान की ज्योति जगाने को।
शिक्षित-संगठित बनो शोषितों,
संघर्ष करो हक पाने को।।

बाबा का वरदान

अक्षय वैभव का बना गये,
बाबा स्वामी कंगालों को।
घर होकर भी जो बेघर थे,
घर सौंप गये घरवालों को।।

युग बीत गया ज्यों की त्यों ही,
जंजीरें पड़ी गुलामी की।
चलता ही रहा यह कालचक्र,
बदली नहीं रीति सलामी की।।
इतिहास अँधेरे में खोया,
युग करवट लेना भूल गया।
विस्मृत का झीना सूनापन,
जो शेष रहा बन शूल गया।।

बर्बर घर में घुस बैठ गये,
बनवास दिया घरवालों को।
अक्षय वैभव का बना गये,
बाबा स्वामी कंगालों को।।

कितने शासन कितनी सत्ता,
बदली इतिहास बताता है।
जो स्वामी थे, वे दास बने,
जग तो उपहास उड़ाता है।।
सीमा जो वर्ण-व्यवस्था की,
कारागृह बनी तुम्हारी है।।
यह पराधीनता की द्योतक,
मत समझो शान तुम्हारी है।।

सब हरी तुम्हारी धन-धरती,
टकटोल लिया टकसालों को।
अक्षय वैभव का बना गये,
बाबा स्वामी कंगालों को।।

जितने कंटक-संकट मग में,
बाबा कर उनको दूर गये।
आँखें खोलो युग बदल रहा,
नवयुग का ताना पूर गये।।
दकियानूसी प्रतिबन्धों को,
बाबा कर चकनाचूर गये।।
धार्मिक-सामाजिक-राजनीति,
दे शक्ति तुम्हें भरपूर गये।।

आनेवाला कल अपना है,
छोड़ो मन के भ्रमजालों को।
अक्षय वैभव का बना गये,
बाबा स्वामी कंगालों को।।

क्या मिशन इसी को कहते है?

बाबा ने कहा शिक्षित होकर
संगठित बनो, सघर्ष करो।
दलितों अपना लो बौद्ध धर्म,
उठ जागो तुम उत्कर्ष करो।।
न बौद्ध बने, न एक हुए,
संघर्ष तो करना दूर रहा।
आंबेडकरवादी सोचो तो,
क्या मिशन इसी को कहते हैं?

अपनों की अपने काट करें,
अपनों की खड़ी खुद खाट करें।
आपस में बन्दर बाँट करें,
भटके-भरमाये रहते हैं।
आंबेडकरवादी सोचो तो,
क्या मिशन इसी को कहते हैं?

अपनों के काम न आते हम,
औरों का हुक्म बजाते हम,
बेगैरत हो बेगार करें,
नादानी करते रहते हैं।
आंबेडकरवादी सोचो तो,
क्या मिशन इसी को कहते हैं?

बच्चों को नहीं पढ़ाते हैं,
मदिरा पी शोर मचाते हैं,
करें खर्च कमाई से ज्यादा,
गफलत में डूबे रहते हैं।
आंबेडकरवादी सोचो तो,
क्या मिशन इसी को कहते हैं?

बच्चों के व्याह-सगाई हों,
ब्राह्मण को बूझ सुझाते हैं,
झूठे देवी-देवों में ही,
उलझे-डलझाये रहते हैं।
आंबेडकरवादी सोचो तो,
क्या मिशन इसी को कहते हैं?

न धर्म बढ़ा न राजनीति,
बढ़ गई सवर्णों की अनीति,
नेता कुर्सी के चक्कर में,
सब को चकराये रहते हैं।
आंबेडकरवादी सोचो तो,
क्या मिशन इसी को कहते हैं?

लाल किला

सामन्तों-पूँजीपतियों की जो
मिलीभगत से काम हुआ।
सत्ता-परिवर्तन का सौदा
करने पर कत्लेआम हुआ।।
हिंसा-नफ़रत पर रखी गई
आजादी की आधार-शिला।
आजाद हुआ बस लाल किला।।

दो-चार चमन में फूल खिले,
कहते ऋतुराज वसन्त हुआ।
ठूठों पर नज़र नहीं डाली,
जिनके जीवन का अन्त हुआ।।
परकटे परिन्दों से पूछो,
जिनका धूँ-धूँकर नीड़ जला।
आजाद हुआ बस लाल किला।।

पीढ़ी-दर-पीढ़ी बीत गई
बँधुआपन में बेगारी में।
खप गई उमर धन्नासेठों
की टहल में ताबेदारी में।।
तुम कहते आजादी आई,
हमको न अभी तक पता चला।
आजाद हुआ बस लाल किला।।

आजादी आई महलों में,
झोपड़ियों में है अन्धकार।
भूखे-प्यासे तन से जर-जर
कंकालों का है चीत्कार।।
शोषक ने सिंहासन पाया,
शोषित को नहीं स्वराज मिला।
आजाद हुआ बस लाल किला।।

फाँसी के तख्ते पर चढ़कर
जिस आजादी के पढ़े छन्द।
'बिस्मिल' की वह आजादी
तो कोठी-बँगलों में हुई बन्द।।
भगत सिंह, शेखर, सुभाष के
अरमानों को धूल मिला।
आजाद हुआ बस लाल किला।।

निराकरण

आदमी को आदमी से जोड़ दो।
इस नये युग को नया अब मोड़ दो।

भेद पुरखों ने किए जो भूल से।
चुभ रहे वह आज मन को शूल से।।
समाज का ऐसा विभाजन कर गए।
कूल सरिता का अलग ज्यों कूल से।।
श्रृंखला जड़ जातियों की तोड़ दो।
इस नये युग को नया अब मोड़ दो।।

धर्म-शास्त्रों में किया जो विष वमन।
बन गया वह आज जीवन का कफन।।
उजड़ इस से ही गया है यह चमन।
दास सदियों तक रहा प्यारा वतन।।
सत्य पर परदा गिराना छोड़ दो।
इस नये युग को नया अब मोड़ दो।।

अतीत का यह मोह भारी भूल है।
सब दुखों का निहित इसमें मूल है।
पूर्वाग्रह ही दे रहा है संताप है।
छोड़ दो जो प्रकृति के प्रतिकूल है।।
रूढ़ियां प्रचलित पुरानी छोड़ दो।
इस नये युग को नया अब मोड़ दो।।

कर्म से कंधा चुराना छोड़ दो।
कर्म को गन्दा बताना छोड़ दो।।
कर्म को कुकर्म बनाया आप ने।
कर्म का चक्कर चलाना छोड़ दो।।
धर्म को धन्धा बनाना छोड़ दो।
इस नये युग को क्या आब मोड़ दो।।

विषमता हर क्षेत्र में जो आज है।
द्वेष दूषित यों सकल समाज है।।
भेद भाषा-क्षेत्र का बढ़ने लगा।
हो रहा खंडित अखंडित ताज है।।
सूत्र समता-एकता का जोड़ दो।
इस नये युग को नया अब मोड़ दो।।

प्रकट प्रकाशपुंज संत रविदास हैं

प्रेम के पयोध बोध, शील समता के सिंधु,
भारत भुवन भानु चारु चन्द्रहास हैं।
शोषित समाज बीच स्वाभिमान ज्ञान सींच,
धीर वीर भावना के भरे उच्छवास हैं।
द्विजन के मान मारे ज्ञान को प्रकाश करि,
संतन के सर्वस्व सुखद सुवास हैं।
सुधाकर धर्म क्रांति किन्ही बनि शांतिदूत,
प्रकट प्रकाशपुंज संत रविदास हैं।

हिन्दू मुसलमान ईसाई सिख जैन बौद्ध,
न्यारे नाम आदमी के धरवाए हैं।
जननी की कोख से तो एक से ही लाल जने,
जाति वर्ण भेद आदमी ने उपजाए हैं।
पेड़ पशु जीव जंतु पक्षियों में जाति भेद,
नर-नारी दो ही भेद मानव के पाए हैं।
कागज़ की लेखी नहीं, आंखिन कु देखी कही,
सुधाकर सहज रविदास चेताए हैं।

बुद्ध-पूर्णिमा

बुद्ध-पूर्णिमा विश्व पर्व है, सब पर्वों से न्यारा।
आज बुद्ध के चरणों में नतमस्तक विश्व है सारा।।

जन्म-ज्ञान-निर्वाण दायिनी, पावन पूरणमासी।
विश्व बुद्ध को शीश झुकाता, भूले भारतवासी।।
ज्ञान-शील-करूणा-मैत्री की, पावन निर्मल धारा।
आज बुद्ध के चरणों में नतमस्तक विश्व है सारा।।

सात समुन्दर पार बुद्ध का ही सन्देश गया था।
विश्वगुरु भारत ऐसे ही बन सुविशेष्ज्ञ गया था।।
बुद्ध के उपदेशों से गूँजा विश्व-शान्ति का नारा।
आज बुद्ध के चरणों में नतमस्तक विश्व है सारा।।

धर्म-संस्थापक न धरा पर बुद्ध के जैसा कोई।
मानवता-समता की जिस ने अमरबेलि है बोई।।
अपना दीपक आप बने, प्रज्ञा-त्रिपिटक सहारा।
आज बुद्ध के चरणों में नतमस्तक विश्व है सारा।।

बहुजन-हिताय,बहुजन-सुखाय संसार में विचरण करना।
पीड़ित-पतित-दलित-पिछड़ों के कष्ट निवारण करना।।
श्रमण-संस्कृति से ही होगा, अब कल्याण हमारा।
आज बुद्ध के चरणों में नतमस्तक विश्व है सारा।।

हिंसा-चोरी-काम भोग, मिथ्यापन-मदिरा छोड़ो।
पंचशील यह बुद्ध का मानव को मानव से जोड़ो।।
नैतिकता ही धर्म तथागत बुद्ध ने यही उचारा।
आज बुद्ध के चरणों में नतमस्तक विश्व है सारा।।

अगर बुद्ध के पदचिन्हों पर चले विश्व यह सारा।
अनाचार-आतंक किसी को होगा नहीं गवारा।।
बुद्ध के मध्यम मार्ग से सम्भव युद्धों का निपटारा।
आज बुद्ध के चरणों में नतमस्तक विश्व है सारा।।

सन्त गुरू रविदास

संतप्त-त्रस्त जन-मानस को नव-जीवन का विश्वास दिया।
संतो में संत शिरोमणि गुरू रविदास ने ज्ञान-प्रकाश किया।।

कर्म-कसौटी परख ज्ञान की प्रेरक जन-कल्याणी है।
निर्वाध प्रवाहित निर्मल गंगाजल सी अमृतवाणी है।।
प्रेम-शान्ति सदभाव-एकता-मानवता नूरानी है।
रविदास सन्त की गौरव गाथा, करुणाभरी कहानी है।।
सामाजिक-समताहेतु सतत रविदास ने पुण्य प्रयास किया।
संतो में संत शिरोमणि गुरू रविदास ने ज्ञान-प्रकाश किया।।

स्वाभिमान-सम्मान से जीने का आभास कराया था।।
सामाजिक परिवर्तन का रविदास ने चक्र चलाया था।
रविदास सन्त ने धर्म क्रान्ति का निर्भय विगुल बजाया था।।
छल प्रपंच पाखण्ड ढोंग का सन्त ने पर्दाफास किया।
सन्तों में सन्त शिरोमणि गुरु रविदास ने ज्ञान प्रकाश किया।।

वर्ण-जाति-विद्वेष-विषमता की अनबूझ पहेली थी।
गुरु-ज्ञान से प्रभावित फिर भी कितनी ही बड़ी हवेली थी।।
अभिमानी द्विजों के कारण ही भारी विपदाएँ झेली थी।
हाड़ीरानी-मीराबाई विख्यात उन्हीं की चेली थी।।
जात्याभिमानियों ने यद्यपि भारी गुरू का उपहास किया।
सन्तों में सन्त शिरोमणि गुरु रविदास ने ज्ञान-प्रकाश किया।।

गौतम ने बुद्धत्व प्राप्त कर जो सन्मार्ग दिखाया था।
उस मध्यम-मार्ग को सन्तों ने अपने ढँग से अपनाया था।
नानक-कबीर-रविदास इसी धरा के सन्त शिरोमणि थे।
अज्ञान-अंधविश्वास मिटा, प्रज्ञा-प्रकाश दिखाया था।।
संतों की सम्यक वाणी ने भारत का पलट इतिहास दिया।
सन्तों में सन्त शिरोमणि गुरु रविदास ने ज्ञान-प्रकाश किया।।

बुद्ध को नमन, बोधिसत्व को नमन।
दिन-दूना फूले फले प्यारा चमन।।
यह हमार वतन, यह दुलारा वतन।
भीम भारत रतन, कोटि-कोटि नमन।।

बुद्ध और दलित

पर्दा आँखों से देखो उठाकर दलित,
बुद्ध को छोड़ कोई तुम्हारा नहीं।

शोषितों के मसीहा थे आंबेडकर,
ऐसा भारत में कोई भी नेता नही।
बेसहारों के बाबा सहारा रहे,
ऐसा कोई सहारा है देता नहीं।।

जुल्म पर जुल्म दलितों पर होने लगे,
जालिमों को सजा कोई देता नही।
माता-बहिनों की अस्मत लुटने लगी,
दलित सोया हुआ अभी चेता नहीं।।

देश मे कौन ऐसा दलित है बचा,
जो अब तक मुसीबत का मारा नही।
पर्दा आँखों से देखो उठाकर दलित,
बुद्ध को छोड़ कोई तुम्हारा नहीं।।

धन-धरती से वंचित दलित सब हुए,
पेट भरने का कोई भी चारा नही।
बाबा की कृपा से जो पढ़-लिख गए,
चमक पाता है उनका सितारा नही।।

सरकारी जो नौकर हुए कुछ दलित,
उनका रक्षक है कोई हमारा नहीं।
अधिकारी सवर्णो की चलती वहाँ,
जाति-जंजाल से है छुटकारा नहीं।।

कैसे उत्थान भारत में दलितों का हो,
नेता लोगों ने अब तक विचारा नहीं।
पर्दा आँखों से देखो हटाकर दलित,
बुद्ध को छोड़ कोई तुम्हारा नहीं।।

शिक्षित बनो संगठित सब रहो,
करो संघर्ष दूजा है चारा नहीं।।
बौद्ध बनकर सभी मिलकर आगे बढ़ो,
जुल्म हरगिज हो तुमको गवारा नहीं।।

बाबा साहेब का सन्देश सम्बल सबल,
पैदा होंगे अब बाबा दुबारा नहीं।
पाँच शीलों का पालन करो वीर तुम,
झुके पचरंगा झंडा हमारा नहीं।।

मान-सम्मान-समता जो चाहो दलित,
धर्म बदले बिना है गुजारा नहीं।
पर्दा आँखों से देखो हटाकर दलित,
बुद्ध को छोड़ कोई तुम्हारा नहीं।।

पहले भी धर्म यह हमारा रहा,
नया कोई धर्म यह हमारा नहीं।
नागवंशी थे पुरखे हमारे सभी,
धर्म उनका था कोई न्यारा नहीं।।

कश्मीर से कन्याकुमारी तलक,
बुद्ध भारत था, कभी क्यों विचार नहीं।
जो अपना है अपना लो न देरी करो,
समय आयेगा ऐसा दुबारा नहीं।।

बढता ही रहे जो कारवां चल पड़ा,
कदम पीछे हटे अब तुम्हारा नहीं।
पर्दा आँखों से देखो हटाकर दलित,
बुद्ध को छोड़ कोई तुम्हारा नहीं।

अपना दीपक स्वयं बनो आप तुम,
मार्गदाता है कोई तुम्हारा नहीं।
आप अपने ही स्वामी कथन बुद्ध का,
किसी ईश्वर ने जग यह पसारा नहीं।।

स्वर्ग और नर्क झूठी ढोल की पोल है,
पाप और पुण्य धरती से न्यारा नहीं।
शील-समता विमल ज्ञान सुखसार है,
ढोंग-पाखण्ड का है अखाड़ा नहीं।।

बुद्ध-दर्शन 'सुधाकर' है नैतिक नियम,
बद्धिसंगत, कुतर्की पिटारा नहीं।
पर्दा आँखों से देखो हटाकर दलित,
बुद्ध को छोड़ कोई तुम्हारा नहीं।।

धर्म के धन्धेबाज

राजनीति से धर्म को जोड़ा,
धर्म के धन्धेबाजों ने।
गंगा-जल में गरल निचोड़ा,
धर्म के धन्धेबाजों ने।।
निर्मल दर्पण-सा दिल तोड़ा,
धर्म के धन्धेबाजों ने।
नहीं कहीं का देश को छोड़ा,
धर्म के धन्धेबाजों ने।।

मन्दिर-मस्जिद को लड़वाया,
धर्म के धन्धेबाजों ने।
भाई-भाई को भिड़वाया,
धर्म के धन्धेबाजों ने।।
धर्म-दुहाई दे बहकाया,
धर्म के धन्धेबाजों ने।
मानवता में सेंध लगाया,
धर्म के धन्धेबाजों ने।।

नैतिकता का गला घोटवाया,
धर्म के धन्धेबाजों ने।
प्रपंची परकोट चिनाया,
धर्म के धन्धेबाजों ने।।

खोट छिपाकर रोष दिखाया,
धर्म के धन्धेबाजों ने।
धर्म की ओट में नोट कमाया,
धर्म के धन्धेबाजों ने।।

जातिवाद को धर्म बताया,
धर्म के धन्धेबाजों ने।
धनपतियों से हाथ मिलाया,
धर्म के धन्धेबाजों ने।।
सामन्तों को शीश नवाया,
धर्म के धन्धेबाजों ने।
दलितों-पिछड़ों को मरवाया,
धर्म के धन्धेबाजों ने।।

तन्त्र-मन्त्र का यन्त्र चलाया,
धर्म के धन्धेबाजों ने।
यत्र-तत्र-सर्वत्र सताया,
धर्म के धन्धेबाजों ने।।।
घाट-घाट घड़ियाल घुसाया,
धर्म के धन्धेबाजों ने।
खाट-खाट खटमल बन खाया,
धर्म के धन्धेबाजों ने।।

खोटा सिक्का खुल के चलाया,
धर्म के धन्धेबाजों ने।
अपना ही वर्चस्व जमाया,
धर्म के धन्धेबाजों ने।
राष्ट्र-धर्म को बेच के खाया,
धर्म के धन्धेबाजों ने।
भले गधा को बाप बनाया,
धर्म के धन्धेबाजों ने।।

पुस्तक समीक्षा

डॉ. राम मनोहर राव
बरेली, उत्तर प्रदेश

उत्पीड़न की यात्रा
कविता संग्रह की समीक्षा

प्रत्येक लेखक साहित्यकार भी हो, यह आवश्यक नहीं। साहित्यकार सच्चे अर्थों में वही हो सकता है, जिसकी वैचारिकता की एक निश्चित दिशा एवं दृष्टि हो तथा वह सामाजिक सरोकारों से भिज्ञ हो। उचित शिक्षा प्राप्त व्यक्ति ही ज्ञानवान तथा विवेकशील बन पाता है, जो सामाज के समसामयिक घटनाक्रम और तात्कालिक समस्याओं की बेहतर समझ होने के साथ उनके निराकरण हेतु समुचित सुझाव भी प्रस्तुत कर सके। 1938 में उत्तर प्रदेश के मैनपुरी में जन्मे वरिष्ठ साहित्यकार उपर्युक्त कसौटी पर पूर्णरूपेण खरे उतरते हैं। उनकी काव्यकृति 'उत्पीड़न की यात्रा' जो सम्यक प्रकाशन से 1996 में प्रकाशित हुई, में संग्रहीत 38 कवितायें इस तथ्य का स्पष्ट प्रमाण हैं। वरिष्ठ साहित्यकार सुधाकर जी वस्तुतः आंबेडकरवादी हैं और यही कारण है कि उनकी सभी कविताएं सामाजिक सरोकारों से कतई विरत नहीं हुई। भारत की सामाजिक संरचना से वह भलीभाँति परिचित हैं और भारत की आजादी से पूर्व जन्म लेने वाले कवि ने उस तात्कालिक माहौल को स्वयं भी जीया है। कृति की प्रथम रचना जो शीर्षक 'उत्पीड़न की यात्रा' के ही शीर्षक से है, में कवि ने अपनी बेबाकी का परिचय देते हुए सीधे ही स्पष्ट कर दिया है-

हिंसा मूलक वेद- विहित जब यज्ञ का प्रचलन था
नित निरीह पशुओं की बलि दे होता पूर्ण हवन था।।
अश्वमेध गौमेध यज्ञ से दूषित धरा गगन था।
वर्णव्यवस्था जन्म-जाति का कलुषित कुटिल चलन था।
उदय सूर्य सम बुद्ध हुए सदियों का मिटा अंधेरा।
काल निशा हो गई पराजित सम्यक हुआ सवेरा।।
पाखंडो प्रपंचों का वह ध्वस्त हुआ था घेरा।
ज्ञान-शील-समता करुणा का भू पर हुआ उजेरा।।

(उत्पीड़न की यात्रा, पृ.11-16)

अपनी दूसरी रचना 'स्वराज्य' में विद्वान कवि ने स्वतंत्र भारत के हालात पर व्यंग करते हुए सवाल खड़ा कर दिया।

शोषित मजदूर किसानों में कितना परिवर्तन आया है
कितनों के आंसू पूछे हैं कितनो को गले लगाा है।
नेता-नेता आजाद हुए यहाँ उनका ही आजादी है
जनता के जीवन में देखो बर्बादी ही बर्बादी है।।
(स्वराज्य पृ. 19)

वर्तमान में होने वाले जुल्म अत्याचारों का स्पष्ट चित्रण करते हुए वह चिंता व्यक्त करते हैं।

बलात्कार नारी से अभी पुरुष निरंकुश करता है।
नारी के तन का मोल-भाव करने से कब वह डरता है।।

भाषा और धर्म मजहब के झगड़े रोज यहाँ होते हैं।
फुटपाथों पर भूखे नंगे बेघर लाखों ही सोते हैं।।
(आजादी, पृ.21)

धर्म आदमी को आदमी से जोड़ता है

अज्ञानता असमानता अन्य को तोड़ता है
स्वतंत्र समता और भ्रातृत्व धर्म की धुरी है
अस्पृश्यता धर्म की गर्दन पर छुरी है।।
(अश्पृश्यता 22)

आजादी के अमर सपूतों के बलिदान को याद करते हुए कविवर ने वर्तमान सच्चाई पर गहरी चिंता व्यक्त की है।

फाँसी के तख्ते पर चढ़कर जिस आजादी के पढ़े छंद,
बिस्मिल की वह आजादी तो कोठी बंगलों में हुई बंद,
भगत सिंह शेखर सुभाष के अरमानों को धूल मिला।
आजाद हुआ बस लाल किला।।
(लाल किला 23)

भारत के गौरवशाली इतिहास के अनुसार अपने राजा होने की बात बताते हुए मूल भारतीयों का उत्साह वर्धन करते हुए अपेक्षा करते हैं कि पुनः मुस्कान भर दो।

जाग उठो भूले भटके पथ की पहचान करो।
जीवन की सूनी राहों में मिलकर मुस्कान भरो।।
आदि निवासी तुम भारत के यह है सत्य कहानी।
इस धरती पर तुम राजा थे तुम ही थे सेनानी।।

बाबा साहब के तीनों मुख्य उपदेशों को क्रियान्वित करने की अपील करते हैं, तो वहीं बुद्ध के उपदेश अपना दीपक स्वयं बनने की बात करना वे नहीं भूलते और इन्हीं तथ्यों के आधार पर उन्हें सच्चा आंबेडकरवादी कवि कहने में कतई संकोच नहीं होगा।

भीम जोत के नव प्रकाश में उठ उत्कर्ष करो।
शिक्षित और संगठित बनकर तुम संघर्ष करो।।
अपना दीपक बन आप अपना उत्थान करो।
जाग उठो भूले भटके पथ की पहचान करो।।
(पथ की पहचान 24)

आंबेडकरवादी वरिष्ठ साहित्कार ने श्रमण संस्कृति का उल्लेख करते हुए श्रम के अपमान की बात अपने शिकायती लहज़े में व्यक्त करते हुए जहाँ चिंता व्यक्त की है, वहीं धर्म के धंधेबाजों की पोल खोलकर चिंता व्यक्त की है।

मेहनत करता है कोई, कोई है मौज उड़ाता।
कोई बन गया भिखारी कोई राजा कहलाता।।
काले धंधों से अर्जित दौलत पर वे उठलाते।
काली करतूतें हैं उनकी फिर भी सेठ कहलाते।।
मंदिर में देव न देखा, देखा न खुदा मस्जिद में।
मसीहा ना मिला गिरजा में सोहम न सार सबद में।।
रुपया ही धर्म ध्वजा है, रुपया ही राष्ट्र पताका।
फहराती जिसके घर में वह देशभक्त कहलाता।।
(देशभक्त-26)

युगों युगों से आपने हमको छला।
और कब तक यह चलेगा सिलसिला?
(और कब तक 28)

शिक्षा, संगठन और संघर्ष के महत्व को वरिष्ठ आंबेडकरवादी साहित्यकार ने इन पंक्तियों में दर्शाते हुए परिणामों को भी रेखांकित किया है।
पढ़ लिख कर कोई ना किसी की करेगा तावेदारी,
पढ़े लिखो पर नहीं चलेगी किसी की थानेदारी।।
शिक्षित और संगठित होकर जब संघर्ष करोगे,
अधिकारों से वंचित निज लेकर अधिकार रहोगे।।
(अशिक्षा का अभिशाप)

बुद्धजीवियों ने भी समाज के प्रति अपने दायित्वों के निर्वहन से स्वयं को विमुख कर रखा है। इस तथ्य को भी रेखांकित करते हुए अपने दायित्व का बखूबी निर्वहन किया है।

सड़क से लेकर संसद तक का हाल बड़ा है खस्ता।

बांध लिया है बुद्धिजीवियों ने भी अपना बस्ता।।
(आस्था-34)

महाकवि के रूप में स्वयं को स्थापित करने की कड़ी में उनकी रचना एकता के स्वर की निम्नलिखित पंक्तियाँ पर्याप्त हैं।

वर्ण-व्यवस्था, जाति-पाति को जड़ से मिटने दो।
मानव मानव के बीच की खाई को पटने दो।।
एक राष्ट्र की धारा का संकल्प मचलने दो।
गौतम की धरती पर समता सूर्य निकलने दो।।
(एकता के स्वर-35)

आदमी को आदमी से जोड़ दो।
इस नये युग को नया अब मोड़ दो।।

रुढ़ियाँ प्रचलित पुरानी छोड़ दो।
इस नये युग को नया अब मोड़ दो।।

धर्म को धंधा बनाना छोड़ दो।
इस नये युग को अब नया मोड़ दो।।
(निराकरण-36)
अनेक रचनाओं में सामाजिक समस्याओं का कविश्रेष्ठ ने निराकरण भी प्रस्तुत किया है।

पूंजीवाद मिटा दो सत्ता तभी विश्व में होगी
मनुवाद मिटा दो दुनिया से, तो मानवता पनपेगी।।

विद्वान वरिष्ठ कवि श्रद्धेय लक्ष्मी नारायण सुधाकर जी की कृति 'उत्पीड़न की यात्रा' की सभी रचनाओं से बुद्ध और आंबेडकर के दर्शन की समझ तो परिलक्षित होती ही है, वरन उनके सामाजिक सरोकार को भी दर्शाता है। रचनाओं की सारगर्भित ने काव्य कला दर्शाने की गुंजाईश ही नहीं छोड़ी, परन्तु ऐसा नहीं है कि काव्यकला में किसी से पीछे हैं। विषय वस्तु एवं शीर्षकों का चयन अद्‌भुत है। उनकी बेबाकी, प्रस्तुति बेमिसाल है। बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशकों में जब लोग शोषण और शोषितों का वर्णन करते-करते सस्ती लोकप्रियता हेतु शोषकों के प्रति मात्र अशोभनीय आक्रोश व्यक्त कर रहे थे, उसी समय आदरणीय सुधाकर जी जैसे साहित्यकार अपने लेखन में निराकरण लिए हुए सकारात्मक, लोक कल्याणार्थ आंबेडकरवादी लेखन कर रहे थे। यही गुण उन्हें महान साहित्यकार निरूपित करता है।

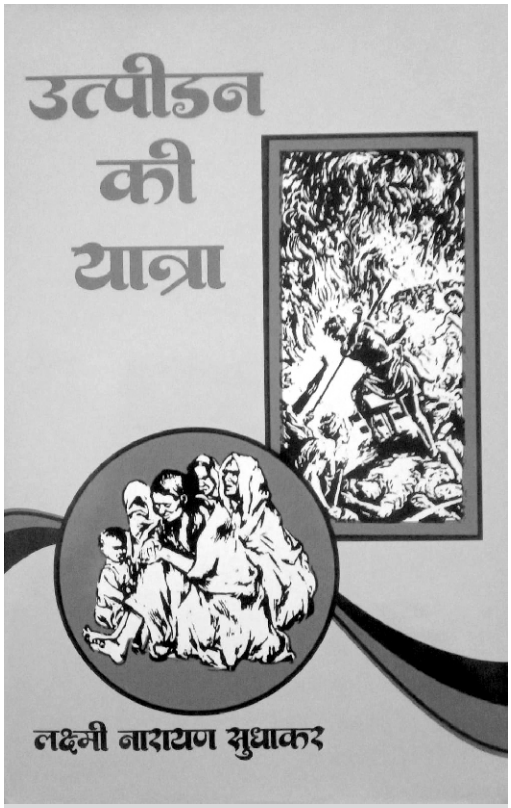

पुस्तक - उत्पीड़न की यात्रा
रचनाकार - एल.एन. सुधाकर
प्रकाशक - सम्यक प्रकाशन नई दिल्ली

'आंबेडकरवादी साहित्य' पत्रिका के मंडल प्रतिनिधिगण

रुपचंद गौतम, दिल्ली, 9868414275
कर्मशील भारती, दिल्ली, 9968297866
विजय छाण, राजस्थान, 9983272626
प्रह्लाद मीणा, राजस्थान, 9982553620
विनोद कुमार, वाराणसी, उत्तर प्रदेश, 8765275887
प्रबुद्धनारायण बौद्ध, चन्दौली, उ.प्र., 9005441713
विजय कुमार, चन्दौली, उ.प्र., 9198371768
सूर्यमल बौद्ध, गाजीपुर, उ.प्र., 9919047757
नीरज कुमार नेचुरल, जौनपुर, उ.प्र., 8318543949
मुन्ना कुमार, जौनपुर, उ.प्र., 7075751143
विरेन्द्र सिंह दिवाकर, हरदोई उ.प्र., 8765076843
अमित कुमार बौद्ध, रामपुर, उ.प्र., 7983836622
लोकेश आजाद, इटावा, उ.प्र., 8847398166
पप्पूराम सहाय, झाँसी, उ.प्र., 6393572259

आगामी अंक

जुलाई-दिसम्बर 2024

(आंबेडकरवादी सजल : स्वरुप एवं प्रवृत्तियाँ)

उक्त विषय से सम्बन्धित आलेख, पुस्तक समीक्षा, संस्मरण, साक्षात्कार आदि आमंत्रित हैं।

'आंबेडकरवादी साहित्य' पत्रिका की सदस्यता हेतु विवरण

सदस्यता शुल्क :

वार्षिक : 350/-
त्रैवार्षिक : 1000/-
द्विवार्षिक : 650/-
आजीवन : 7000/-

भुगतान विकल्प :

Bank Account Number : 35332395763
Account Holder : Devachandra Bharati
Bank Name : STATE BANK OF INDIA
IFSC Code : SBIN0012302
paytm PhonePe G Pay : 9454199538

'आंबेडकरवादी साहित्य' पत्रिका के आजीवन सदस्य

सतीश वर्मा
अलवर, राजस्थान

डॉ. रमेश कुमार
अहमदाबाद, गुजरात

अभय प्रताप
नजफगढ़, दिल्ली

डॉ. नविला सत्यादास
पटियाला, पंजाब

डॉ. मुकुंद रविदास
धनबाद, झारखंड

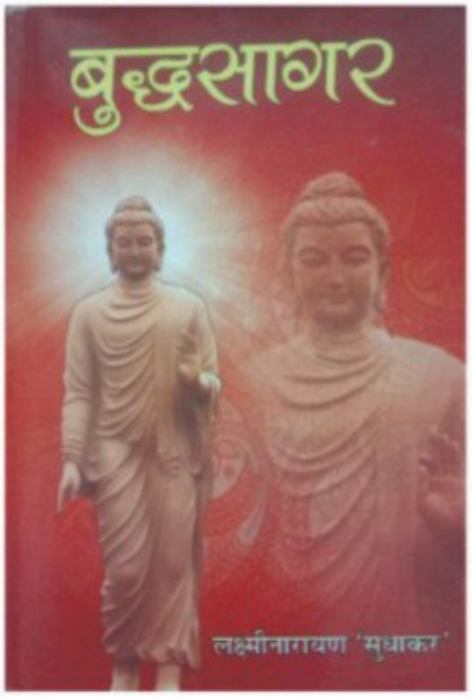
बुद्धसागर
लक्ष्मीनारायण 'सुधाकर'

भीम सागर
लक्ष्मीनारायण 'सुधाकर'

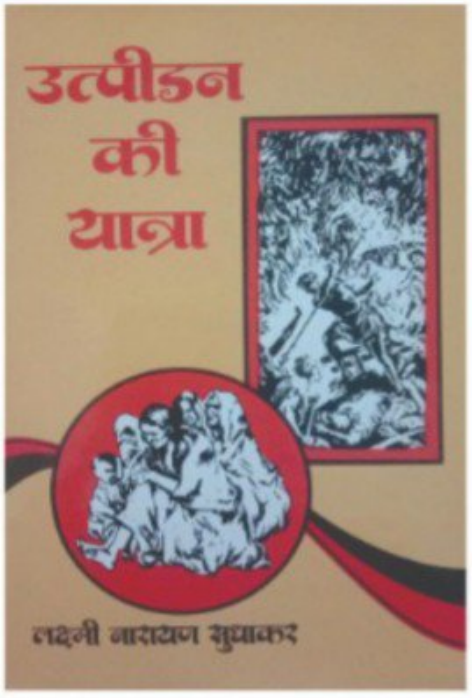
उत्पीड़न
की
यात्रा
लक्ष्मी नारायण सुधाकर

वामन फिर आ रहा है
लक्ष्मी नारायण सुधाकर